गरवी गुजरात

RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 159
दि. 08.10.2025,
बुधवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH Regd. Office: TF-01, Nanakram Super Market,Ramnagar,Sabarmati, Ahmedabad-380 005. Gujarat, India.

Phone : 90163 33307 (M) 93283 33307, 98253 33307 • Email : garvigujarat2007@gmail.com • Email : garvigujarat2007@yahoo.com • Website : www.garvigujarat.co.in

ईमानदार अफसर की चुप्पी: हरियाणा के एडीजीपी वाई पूरन कुमार की रहस्यमयी खुदकुशी से हिल गया पूरा सिस्टम

हरियाणा पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी और राज्य के उन चुनिंदा अफसरों में गिने जाने वाले वाई पूरन कुमार की खुदकुशी ने पूरे प्रशासनिक ढांचे और सियासी गलियारों में गहरा सदमा पहुँचा दिया है। चंडीगढ़ के सेक्टर-11 स्थित अपने सरकारी आवास में सोमवार को उन्होंने खुद को गोली मारकर जीवन समाप्त कर लिया। यह खबर सामने आते ही हरियाणा पुलिस विभाग में सन्नाटा छा गया। उनके इस कदम ने न केवल एक सख्त और निडर अफसर की दुखद परिणति की कहानी कह दी, बल्कि यह भी उजागर कर दिया कि व्यवस्था के भीतर सच्चाई बोलना और अन्याय के खिलाफ खड़ा होना आज भी कितना भारी पड़ सकता है।

पूरन कुमार हरियाणा कैडर के 1995 बैच के आईपीएस अधिकारी थे और अपने साफ-सुथरे कार्यशैली, निर्भीक स्वभाव और बेबाक बोल के लिए जाने जाते थे। उन्होंने अपने पूरे करियर में किसी भी राजनीतिक या जातीय दबाव के आगे झुकना स्वीकार नहीं किया। पिछले एक-दो वर्षों से वे लगातार चर्चा में थे, क्योंकि उन्होंने खुलकर अपने ही विभाग और शीर्ष अधिकारियों के खिलाफ गंभीर आरोप लगाए थे। वे अक्सर कहते थे कि पुलिस और प्रशासन के भीतर व्याप्त जातिगत राजनीति, चहेतों की पदोन्नति और ईमानदार अधिकारियों की अनदेखी ने सिस्टम को खोखला बना दिया है।

साल 2022 में उन्होंने नौ आईपीएस अधिकारियों पर दो-दो सरकारी आवास कब्जे में रखने का आरोप लगाया था। इस मामले में उन्होंने बाकायदा शिकायत दी और सबूत भी पेश किए। उनकी शिकायत पर कार्रवाई हुई और संबंधित अधिकारियों से एक-एक आवास खाली कराया गया, साथ ही उनसे जुर्माना राशि भी वसूली गई। इस कार्रवाई ने विभाग के भीतर कई प्रभावशाली लोगों को असहज कर दिया। इसके बाद पूरन कुमार ने तत्कालीन गृह सचिव राजीव अरोड़ा पर भी आरोप लगाए कि उन्होंने पूर्व डीजीपी मनोज यादव के पक्ष में गलत रिपोर्ट दी है। यह मामला पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट तक पहुँच गया।

पूरन कुमार का टकराव केवल विभागीय स्तर पर ही नहीं रहा, बल्कि उन्होंने राजनीतिक व्यवस्था और चुनाव आयोग तक को चुनौती दी। लोकसभा चुनाव के दौरान उन्होंने तत्कालीन मुख्य निर्वाचन अधिकारी अनुराग अग्रवाल के खिलाफ शिकायत की थी, जिसमें उन्होंने आरोप लगाया था कि राज्य में जाति के आधार पर अफसरों के तबादले किए जा रहे हैं। उनका कहना था कि अनुसूचित जाति के अधिकारियों को हटाया जा रहा है जबकि सवर्ण अधिकारियों को बचाया जा रहा है। उन्होंने इस मामले की शिकायत चुनाव आयोग से की थी। यह पहली बार था जब किसी वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने इतनी खुलेआम चुनावी प्रक्रिया में जातिगत भेदभाव के खिलाफ आवाज उठाई थी।

उनकी यह निर्भीकता कई लोगों को रास नहीं आई। बीते दिनों उनका ट्रांसफर रोहतक किया गया था, परंतु यह साफ नहीं है कि उन्होंने नई पोस्टिंग ज्वाइन की थी या नहीं। बताया जाता है कि वे इस ट्रांसफर से काफी असंतुष्ट थे। इससे पहले 2024 में उन्होंने मुख्यमंत्री नायब सैनी को एक चिट्ठी लिखकर चार अधिकारियों की प्रमोशन को अवैध बताया था। उनका कहना था कि योग्यता और वरिष्ठता की अनदेखी कर राजनीतिक दबाव में पदोन्नति की जा रही है।

उनके जीवन के अंतिम दिनों में वे अपने परिवार के साथ चंडीगढ़ स्थित सरकारी आवास में रह रहे थे। उनकी पत्नी एक वरिष्ठ आईएएस अधिकारी हैं, जो फिलहाल मुख्यमंत्री के साथ जापान दौरे पर थीं। जिस दिन यह घटना हुई, उस समय घर पर उनकी बेटी मौजूद थी। पूरन कुमार ने बेसमेंट में जाकर खुद को गोली मारी। चूँकि बेसमेंट पूरी तरह साउंडप्रूफ था, इसलिए किसी को गोली चलने की आवाज सुनाई नहीं दी। जब काफी देर तक वे ऊपर नहीं आए तो परिवार ने नीचे जाकर देखा, जहाँ वे मृत पाए गए।

पुलिस ने घटनास्थल से सुसाइड नोट बरामद होने की पुष्टि नहीं की है। चंडीगढ़ की एसएसपी कंवरदीप कौर ने बताया कि मामले की गहराई से जांच की जा रही है और परिवार से पूछताछ जारी है। शुरुआती जांच में यह स्पष्ट नहीं हुआ है कि उन्होंने आत्महत्या क्यों की, लेकिन यह संभावना जताई जा रही है कि वे लंबे समय से मानसिक तनाव में थे।

पूरन कुमार का जाना सिर्फ एक अफसर की मौत नहीं है, बल्कि यह व्यवस्था के भीतर उस सच्चाई का उजागर होना है, जो अक्सर दबा दी जाती है। वे उन कुछ अधिकारियों में से थे जो अपने विभाग की गंदगी को साफ करने की हिम्मत रखते थे। उन्होंने जिन मुद्दों को उठाया, वे सत्ता और नौकरशाही के उस अंधेरे कोनों पर रोशनी डालते थे जहाँ जाति, चहेतापंथ और भ्रष्टाचार की जड़ें गहरी हैं। लेकिन शायद यह रोशनी सिस्टम को पसंद नहीं आई।

उनकी मौत के बाद हरियाणा पुलिस और प्रशासन में कई सवाल उठ रहे हैं। क्या पूरन कुमार जैसे ईमानदार अफसर को सिस्टम ने अकेला छोड़ दिया? क्या उनके खिलाफ हुए ट्रांसफर, दबाव और विवादों ने उन्हें टूटने पर मजबूर किया? क्या उन्होंने जिन भ्रष्टाचार और भेदभाव के मुद्दों को उठाया, उनकी जांच कभी होगी?

पूरन कुमार की कहानी एक ऐसे अधिकारी की कहानी है जो अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं कर सका। जिसने झुकने से बेहतर टूट जाना चुना। उनकी मौत प्रशासनिक तंत्र के माथे पर एक गहरा प्रश्नचिह्न छोड़ गई है — क्या हमारे देश में अब भी सच बोलने की सजा यही है?

अक्टूबर में सावन-भादो की यादें ताज़ा: उत्तर भारत में झूमकर बरसे बदरा, पश्चिमी विक्षोभ ने फिर बदला मौसम का मिज़ाज

नई दिल्लीः उत्तर भारत में अक्टूबर का महीना इस बार मानो सावन-भादो की यादें ताज़ा कर रहा है। दिल्ली से लेकर हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, बिहार, झारखंड और राजस्थान तक मंगलवार शाम आसमान से झमाझम बारिश ने पूरे उत्तर भारत को भिगो दिया। यह बरसात ऐसी थी कि लगा जैसे इंद्रदेव ने मॉनसून की विदाई से पहले एक बार फिर अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने का मन बना लिया हो। सोमवार को भी इसी तरह बारिश ने कई इलाकों को तरबतर कर दिया था और मंगलवार को यह सिलसिला और तेज़ हो गया।

दिल्ली-एनसीआर में मंगलवार की सुबह काले घने बादलों ने आसमान को ढक लिया था। कुछ समय बाद बरसात हुई, फिर धूप निकल आई, लेकिन दोपहर के बाद करीब चार बजे एक बार फिर काली घटाओं ने पूरे क्षेत्र को ढक लिया। देखते ही देखते तेज़ हवाएँ चलने लगीं और झमाझम बारिश ने सड़कों को नदियों में बदल दिया। मौसम विभाग ने पहले ही मध्य, दक्षिण-पश्चिम, पश्चिमी और उत्तर-पश्चिम दिल्ली में भारी बारिश और बिजली कड़कने की चेतावनी जारी कर दी थी। हवा की रफ्तार 40 से 50 किलोमीटर प्रति घंटे तक पहुँच गई, जिससे नोएडा, गाजियाबाद और गुरुग्राम में कई जगह पेड़ गिरने और ट्रैफिक जाम की स्थिति बनी।

मौसम विभाग का कहना है कि इस अप्रत्याशित बारिश के पीछे पश्चिमी विक्षोभ का असर है, जो इस समय हिमालय पर्वत श्रृंखला के आसपास सक्रिय है। इसी कारण पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के कई हिस्सों में तेज़ हवाओं के साथ बारिश और कुछ स्थानों पर ओलावृष्टि भी दर्ज की गई। इस पश्चिमी विक्षोभ ने उत्तर-पश्चिम भारत के ऊपर चक्रवाती दबाव का निर्माण किया है। अरब सागर से लगातार नमी खींचकर यह प्रणाली हिमालयी क्षेत्र तक पहुँचा रही है, जिसके कारण बरसात का यह असामान्य दौर चल रहा है।

मौसम वैज्ञानिक तृषाणु बनिक ने बताया कि अगले पाँच से छह दिनों तक दक्षिण भारत में भी वर्षा की गतिविधियों में वृद्धि देखी जाएगी। तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश के कई इलाकों में भारी वर्षा की संभावना है। यह बारिश "चक्रवात शक्ति" नामक निम्न दबाव प्रणाली से जुड़ी है, जिसने दक्षिण भारत के तटीय इलाकों पर भी असर डाला है।

पश्चिमी विक्षोभ के कारण शुरू हुआ यह बरसाती दौर 5 अक्टूबर से जारी है और मौसम विभाग ने संकेत दिए हैं कि यह क्रम 8 अक्टूबर तक जारी रह सकता है। यानी आने वाले कुछ दिनों तक उत्तर भारत के कई हिस्सों में बादल छाए रहेंगे और कभी भी बारिश हो सकती है। दूसरी ओर, इस बारिश के बावजूद मॉनसून की वापसी की प्रक्रिया भी जारी है। अगले तीन से चार दिनों में गुजरात, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र के शेष हिस्सों से दक्षिण-पश्चिम मॉनसून के लौटने के हालात बन रहे हैं।

मौसम विभाग के पूर्वानुमान के अनुसार, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, पश्चिमी राजस्थान और ओडिशा के बड़े हिस्सों में भारी वर्षा दर्ज की जा सकती है। जम्मू-कश्मीर, हरियाणा, पूर्वी राजस्थान, पूर्वी मध्य प्रदेश, विदर्भ, झारखंड, तटीय आंध्र प्रदेश, रायलसीमा, कर्नाटक, तेलंगाना और तमिलनाडु में भी बारिश का सिलसिला जारी रहने का अनुमान है।

आईएमडी के महानिदेशक मृत्युंजय मोहपात्रा ने पहले ही अक्टूबर महीने के लिए औसत से 15 प्रतिशत अधिक वर्षा की संभावना जताई थी। उनका कहना था कि अक्टूबर से दिसंबर के बीच उत्तर-पश्चिम भारत — विशेषकर पंजाब, हरियाणा, दिल्ली और पश्चिमी उत्तर प्रदेश — में मॉनसून की वापसी के बाद भी सामान्य से अधिक वर्षा देखने को मिल सकती है। वहीं दक्षिण भारत के राज्यों तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, रायलसीमा, केरल और दक्षिण कर्नाटक में औसत से 112 प्रतिशत तक अधिक बारिश होने का संकेत दिया गया था।

यह अक्टूबर का बदलता मौसम इस बात का प्रमाण है कि जलवायु परिवर्तन का असर अब हमारे पारंपरिक मौसम चक्रों पर भी गहराई से पड़ने लगा है। मॉनसून की विदाई के बाद आमतौर पर साफ आसमान और हल्की ठंड की शुरुआत होती थी, लेकिन इस बार आसमान अब भी गरज-चमक के साथ बरस रहा है। किसान जहां धान की फसल कटाई के मुहाने पर हैं, वहीं यह बारिश उनके लिए राहत और चिंता दोनों का कारण बनी हुई है। कुछ इलाकों में नमी से फायदा हो सकता है, पर वहीं ओलावृष्टि और तेज़ हवाएँ फसलों को नुकसान भी पहुँचा सकती हैं।

उत्तर भारत में इस समय का यह "अक्टूबर मॉनसून" लोगों के लिए हैरान करने वाला है। सड़कें जलमग्न, यातायात अव्यवस्थित और आसमान अब भी गड़गड़ाहट से भरा हुआ है। मौसम का यह बदलता स्वरूप न केवल प्रकृति की अप्रत्याशित लीला है, बल्कि इस बात की चेतावनी भी कि जलवायु का संतुलन अब हमारी आंखों के सामने धीरे-धीरे बदल रहा है।

निचली अदालतों में पदोन्नति की रुकावट पर सुप्रीम कोर्ट का बड़ा कदम, अब संविधान पीठ तय करेगी न्यायिक अधिकारियों का भविष्य

नई दिल्ली। देश की न्यायिक व्यवस्था में लंबे समय से चर्चा में रहे एक गंभीर मुद्दे — अधीनस्थ न्यायपालिका में पदोन्नति और करियर प्रगति की रुकावट — पर सुप्रीम कोर्ट ने अब निर्णायक रुख अपनाया है। मंगलवार को सर्वोच्च न्यायालय ने इस मामले को पांच जजों की संविधान पीठ के पास भेज दिया, ताकि इस संवेदनशील विषय पर एक व्यापक और स्थायी समाधान निकाला जा सके।

मुख्य न्यायाधीश बी. आर. गवई और न्यायमूर्ति के. विनोद चंद्रन की पीठ ने अखिल भारतीय न्यायाधीश संघ की याचिका पर सुनवाई करते हुए कहा कि निचली अदालतों में कार्यरत न्यायिक अधिकारियों के लिए वर्तमान पदोन्नति व्यवस्था न केवल सीमित है, बल्कि न्यायिक सेवा की प्रेरणा और गुणवत्ता पर भी इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। याचिका में यह तर्क दिया गया था कि देशभर में अधीनस्थ न्यायपालिका में कार्यरत न्यायिक अधिकारियों के वेतनमान, सेवा शर्तें और करियर प्रगति में भारी असमानता है, जिससे उनका मनोबल गिरता जा रहा है। मुख्य न्यायाधीश ने इस दौरान चिंता व्यक्त की कि देश के कई हिस्सों में ऐसे युवा अधिकारी हैं जो 25 या 26 वर्ष की आयु में न्यायिक सेवा में प्रवेश करते हैं, परंतु पूरी सेवा के बाद भी अधिकतम अतिरिक्त जिला जज के पद से आगे नहीं बढ़ पाते। उन्होंने कहा कि यह स्थिति स्वाभाविक रूप से हताशा और निराशा उत्पन्न करती है, जो न्यायपालिका के आत्मबल और दक्षता पर प्रतिकूल असर डाल सकती है। सुप्रीम कोर्ट ने बताया कि इस मामले पर पहले जारी नोटिसों के जवाब में देश के विभिन्न उच्च न्यायालयों और राज्य सरकारों से अलग-अलग विचार सामने आए हैं। कुछ राज्यों ने पदोन्नति प्रक्रिया को वरिष्ठता और योग्यता पर आधारित बताया, जबकि कई अन्य राज्यों में इसे सीमित पदों और कठोर मापदंडों की वजह से ठहरा हुआ माना गया। अदालत ने माना कि इन सभी मतभेदों को सुलझाने के लिए अब एक समान और संवैधानिक दृष्टिकोण आवश्यक है।

संविधान पीठ यह तय करेगी कि अधीनस्थ न्यायिक सेवा में पदोन्नति का ढांचा किस प्रकार अधिक पारदर्शी और समान अवसर वाला बनाया जा सकता है। इसके अलावा यह भी देखा जाएगा कि न्यायिक सेवा के विभिन्न स्तरों के बीच वेतनमान और करियर प्रगति में किस हद तक एकरूपता लाई जा सकती है, ताकि सभी राज्यों में न्यायपालिका एक समान मानकों पर खड़ी हो।

कानूनी विशेषज्ञों का मानना है कि इस निर्णय से न्यायिक सेवा में निचले स्तर पर काम कर रहे हजारों अधिकारियों की उम्मीदें जुड़ी हैं। दशकों से चली आ रही यह समस्या अब शायद किसी ठोस समाधान की दिशा में बढ़ेगी।

अदालत का यह कदम केवल एक कानूनी प्रक्रिया नहीं, बल्कि भारतीय न्यायपालिका की नींव को मजबूत करने की दिशा में उठाया गया एक ऐतिहासिक कदम माना जा रहा है — ताकि न्याय देने वाले स्वयं भी अपने करियर में न्याय महसूस कर सकें।

अक्टूबर में मानसून की आखिरी दस्तक, सावन-भादो जैसी झमाझम बारिश से भीगा उत्तर भारत

नई दिल्ली। मानो इंद्रदेव ने अक्टूबर में एक बार फिर सावन-भादो का मौसम लौटा दिया हो। उत्तर भारत के लगभग सभी हिस्सों में मंगलवार को आसमान से झमाझम बरसात हुई। उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब, हरियाणा, बिहार, झारखंड, राजस्थान से लेकर दिल्ली-एनसीआर तक शाम ढलते ही काले बादलों ने आसमान को ढँक लिया और देखते ही देखते तेज बारिश शुरू हो गई। सोमवार को भी इंद्रदेव का यही प्रकोप देखने को मिला था, लेकिन मंगलवार की बारिश ने तो मानो मानसून की विदाई को कुछ देर के लिए रोक दिया। दिल्ली में सुबह के समय आसमान पर काले बादल छा गए थे, फिर दोपहर में धूप खिली, लेकिन शाम चार बजे के आसपास फिर से मौसम पलट गया। पश्चिमी हवा के झोंकों के साथ अचानक तेज हवाएं चलीं और कई इलाकों में बिजली कड़कने लगी। दिल्ली, नोएडा और गाजियाबाद के लोगों ने दोबारा झमाझम बारिश का आनंद लिया, लेकिन इससे ट्रैफिक जाम और जलभराव जैसी परेशानियाँ भी सामने आईं। मौसम विभाग ने पहले ही चेतावनी दी थी कि मध्य दिल्ली, दक्षिण-पश्चिम और उत्तर-पश्चिम दिल्ली में भारी वर्षा हो सकती है। विभाग के अनुसार, यह बारिश कोई साधारण घटना नहीं बल्कि हिमालयी क्षेत्र के पास सक्रिय पश्चिमी विक्षोभ का परिणाम है, जिसने एक बार फिर नमी को उत्तर भारत की ओर खींच लिया है। पश्चिमी विक्षोभ इस समय पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के ऊपर सक्रिय है। इसकी वजह से चक्रवाती दबाव बन गया है, जिसके चलते बादल लगातार बने हुए हैं।

प्रधानमंत्री मोदी का महाराष्ट्र दौरा: विकास तकनीक और कूटनीति की नई सौगातें

मुंबई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आज से दो दिवसीय महाराष्ट्र दौरे पर हैं, जो देश में विकास, नवाचार और वैश्विक साझेदारी की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित होगा। इस दौरान वे न केवल मुंबई मेट्रो लाइन-3 और नवी मुंबई अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे जैसी बड़ी अवसंरचनात्मक परियोजनाओं का उद्घाटन करेंगे, बल्कि ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर से मुलाकात कर भारत–ब्रिटेन रणनीतिक साझेदारी को नई दिशा देंगे।

प्रधानमंत्री मोदी मुंबई मेट्रो की लाइन-3 (एक्वा लाइन) के अंतिम चरण का शुभारंभ करेंगे। लगभग 37,270 करोड़ की लागत से बनी यह लाइन 33.5 किलोमीटर लंबी है और कफ परेड से आरे जेवीएलआर तक फैली हुई है। इसमें कुल 27 स्टेशन हैं जो मंत्रालय, मरीन ड्राइव, नरीमन पॉइंट, विधान भवन और आरबीआई जैसे प्रमुख इलाकों को जोड़ेंगे। इस मेट्रो लाइन के शुरू होने से लाखों यात्रियों को हर दिन सफर में बड़ी राहत मिलेगी। अनुमान है कि इस मार्ग से रोजाना करीब 13 लाख लोग यात्रा करेंगे। किराया भी आम जनता के लिए किफायती रखा गया है — 3 किलोमीटर तक 10, जबकि 12 किलोमीटर तक 20 और अधिकतम 50-60 के बीच।

अपने दौरे के दौरान प्रधानमंत्री मोदी महाराष्ट्र सरकार के STEP प्रोग्राम की भी शुरुआत करेंगे। यह योजना युवाओं को उद्योगों की आधुनिक आवश्यकताओं से जोड़ने के लिए तैयार की गई है। इसमें 400 सरकारी ITI और 150 तकनीकी उच्च विद्यालय शामिल किए गए हैं। लगभग 2,500 नए ट्रेनिंग बैच शुरू होंगे, जिनमें 364 केवल महिलाओं के लिए आरक्षित हैं। कार्यक्रम में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, इंटरनेट ऑफ थिंग्स, इलेक्ट्रिक व्हीकल्स, सोलर एनर्जी और 3D प्रिंटिंग जैसी आधुनिक तकनीकों से जुड़ी ट्रेनिंग भी दी जाएगी। यह पहल युवाओं को न केवल रोजगार दिलाने में मदद करेगी बल्कि राज्य की अर्थव्यवस्था को नई दिशा देगी।

पीएम मोदी मुंबई वन मोबाइल ऐप भी लॉन्च करेंगे — यह भारत का पहला ऐसा प्लेटफॉर्म होगा जो 11 सार्वजनिक परिवहन सेवाओं को एकीकृत करेगा। इसमें मुंबई मेट्रो की सभी लाइनें, मोनोरेल, लोकल ट्रेन और BEST बस सेवाएं शामिल होंगी। यह ऐप यात्रियों को डिजिटल टिकटिंग, रीयल टाइम अपडेट्स और SOS सुरक्षा फीचर जैसी सुविधाएं देगा। इसके माध्यम से यात्रा न केवल आसान बल्कि अधिक सुरक्षित और पारदर्शी बन जाएगी।

प्रधानमंत्री मोदी नवी मुंबई इंटरनेशनल एयरपोर्ट के पहले चरण का उद्घाटन भी करेंगे। लगभग 16,950 करोड़ की लागत से तैयार यह हवाई अड्डा 1,160 हेक्टेयर में फैला है और भारत के सबसे आधुनिक एयरपोर्ट्स में से एक बनने जा रहा है। इसके पहले चरण में टर्मिनल 1 और 3,700 मीटर लंबा रनवे तैयार किया गया है, जो एयरबस A380 जैसे बड़े विमानों की लैंडिंग और टेकऑफ के लिए सक्षम है। यह एयरपोर्ट प्रति वर्ष 2 करोड़ यात्रियों और 0.8 मिलियन मीट्रिक टन कार्गो संभालने की क्षमता रखता है। आने वाले वर्षों में जब इसके सभी चार टर्मिनल पूरे हो जाएंगे, तब यह एयरपोर्ट हर साल 9 करोड़ यात्रियों और 3.25 मिलियन मीट्रिक टन कार्गो संभालने में सक्षम होगा। अपने इस दौरे के दौरान प्रधानमंत्री मोदी ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर से भी मुलाकात करेंगे। दोनों नेता भारत–ब्रिटेन "विजन 2035" रोडमैप की प्रगति की समीक्षा करेंगे, जिसमें व्यापार, प्रौद्योगिकी, रक्षा, शिक्षा, स्वास्थ्य और जलवायु जैसे क्षेत्रों में सहयोग को गहरा करने पर चर्चा होगी। साथ ही वे भारत–ब्रिटेन व्यापक आर्थिक और व्यापार समझौते (CETA) पर भी बातचीत करेंगे। इस मुलाकात के दौरान दोनों देश आने वाले दशक में निवेश, तकनीकी सहयोग और नवाचार के नए अवसरों की दिशा में ठोस कदम उठाने की तैयारी कर रहे हैं।

9 अक्टूबर को प्रधानमंत्री मोदी और प्रधानमंत्री स्टार्मर मुंबई के जियो वर्ल्ड सेंटर में आयोजित 6वें ग्लोबल फिनटेक फेस्ट 2025 में भी हिस्सा लेंगे, जहां दोनों नेता डिजिटल अर्थव्यवस्था और वित्तीय नवाचार पर अपने विचार साझा करेंगे।

प्रधानमंत्री मोदी का यह महाराष्ट्र दौरा केवल विकास परियोजनाओं के उद्घाटन तक सीमित नहीं है — यह भारत के तकनीकी, आर्थिक और कूटनीतिक भविष्य की दिशा तय करने वाला अध्याय है। मेट्रो से लेकर एयरपोर्ट तक, और युवाओं के कौशल विकास से लेकर वैश्विक साझेदारी तक, यह दौरा भारत के आत्मनिर्भर, प्रगतिशील और वैश्विक नेतृत्व वाले युग की ओर बढ़ते कदम का प्रतीक है।

सत्यमेव जयते
गुजरात सरकार

विकास सप्ताह

24 साल जनविश्वास, सेवा और समर्पण के

स्टार्टअप हब बना गुजरात

युवाओं को मिला अवसरों का नया आसमान

संपादकीय

शांति की आस

आखिरकार डोनाल्ड ट्रंप की शांति का नोबेल पुरस्कार पाने की तीव्र आकांक्षा के बीच की गई पहल से गाजा में दो साल से जारी इस्राइल के निरंकुश हमलों पर रोक लगने की आस जगी है। मिस्र के शर्म अल-शेख रिसॉर्ट में अमेरिका की मध्यस्थता में शुरू हुई वार्ता ने दुनियाभर में भरोसा जगाया है कि अब गाजा संकट का समाधान निकल सकता है। वास्तव में दो साल से जारी इस्राइल-हमास संघर्ष में मानवता कराह रही है। हालांकि, इस संकट की शुरुआत हमास के क्रूर आतंकी हमले से ही हुई थी। दरअसल, यह संघर्ष 7 अक्तूबर, 2023 को हमास के आतंकवादियों द्वारा इस्राइल की धरती पर गए स्तब्धकारी क्रूर हमले के बाद शुरू हुआ था। इस जघन्य नरसंहार में इस्राइल व कुछ अन्य देशों के बारह सौ के करीब नागरिक मारे गए थे। इतना ही नहीं हमास के आतंकवादी 250 इस्राइली व अन्य देशों के लोगों को बंधक बनाकर ले गए थे ताकि इस्राइल पर वार्ता में दबाव बनाया जा सके। अभी कुछ जीवित बंधक तथा कुछ मृतकों के शव हमास के कब्जे में हैं, जिन्हें वह वार्ता में ढाल की तरह इस्तेमाल करता रहा है। इस घटनाक्रम को यहूदियों के सबसे बड़े नरसंहार के बाद दूसरा बड़ा खूनी दिन बताया गया था। जिसका जवाब इस्राइल ने गाजा को मटियामेट करके दिया, जिसमें हमास के आतंकवादियों समेत 67000 से ज्यादा फलस्तीनी मारे गए। जिसमें अधिकांश आम नागरिक थे। इस्राइल के लगातार जारी घातक हमलों से गाजा आज खण्डहर में तब्दील हो गया है। बताया जाता है कि करीब 22 लाख गाजावासियों में ज्यादातर बेघर हैं और भूख से जूझ रहे हैं। हाल ही में संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद द्वारा नियुक्त स्वतंत्र वरिष्ठ जांचकर्ताओं ने निष्कर्ष निकाला था कि गाजा में इस्राइली हमलों की कार्रवाई नरसंहार की श्रेणी में आती है। मिस्र के शर्म अल-शेख रिसॉर्ट में अमेरिका की मध्यस्थता में शुरू हुई वार्ता के बाद कहा जा रहा है कि इस्राइल और हमास अमेरिकी राष्ट्रपति द्वारा प्रस्तावित 20-सूत्रीय योजना के कुछ हिस्सों को लेकर सहमत हो गए हैं। बहरहाल, इस्राइल व हमास के समझौते की ओर बढ़ने से हमास के कब्जे में रखे गए बंधकों की रिहाई की उम्मीद भी जगी है। हालांकि, इस समझौता वार्ता का एक विवादास्पद मुद्दा हमास का निरस्त्रीकरण भी है, जिसे हमास स्वीकारने को तैयार नहीं हो रहा था। वहीं गाजा के शासन से हमास को बाहर रखे जाने के मुद्दे का भी वार्ता के परिणामों पर प्रतिकूल असर पड़ सकता है। इस वार्ता को लेकर भारत ने सकारात्मक प्रतिक्रिया दी है। भारत ने ट्रंप की योजना को फलस्तीन और इस्राइली लोगों के लिये दीर्घकालिक और स्थायी शांति, सुरक्षा और विकास का एक व्यवहार्य मार्ग बताते हुए, इस पहल की सराहना की है। निस्संदेह, भारत की यह सक्रिय प्रतिक्रिया हाल के वर्षों में गाजा संघर्ष में युद्धविराम से संबंधित संयुक्त राष्ट्र प्रस्तावों पर मतदान से उसके बार-बार परहेज करने के बिल्कुल विपरीत है। उल्लेखनीय है कि पिछले महीने ही भारत ने फलस्तीनी मुद्दे के शांतिपूर्ण समाधान और द्विराज्य विकल्प के क्रियान्वयन पर न्यूयॉर्क घोषणापत्र का समर्थन करने वाले संयुक्त राष्ट्र प्रस्ताव के पक्ष में मतदान किया था। इस परिप्रेक्ष्य में एक महत्वपूर्ण बदलाव तब देखा गया जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नौ सितंबर को कतर पर हुए इस्राइली हमलों की निंदा की थी। हालांकि, उन्होंने इस बाबत हमलावर, इस्राइल का नाम लेने से परहेज किया था। इसमें दो राय नहीं कि ट्रंप की योजना को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का समर्थन देना स्पष्ट रूप से भारत और अमेरिका के संबंधों को पटरी पर लाने के एक प्रयास के रूप में देखा जा रहा है। वैसे देखा जाए तो दिल्ली ने इस्राइल के मामले में काफी हद तक सावधानी बरती है। यह तथ्य किसी से छिपा नहीं है कि पहलगाम हमले के बाद आतंकवाद के मुद्दे पर भारत के बचाव के अधिकार का इस्राइल ने पुरजोर समर्थन किया था। भारत को उम्मीद है कि पश्चिम एशिया में उसकी यह पहल अशांत क्षेत्र में शांति बहाल होने पर फायदेमंद साबित हो सकती है।

ताकि दवा जहर बन फिर से मासूमों की मौत न बने

> “दवाओं के उत्पादन में भारत दुनिया में तीसरे नंबर पर है। करीब 200 देशों में यहां से दवाएं निर्यात होती हैं और जेनेरिक दवाएं सबसे ज्यादा यहीं बनती हैं। इन उपलब्धियों के बीच इन दो प्रमुख राज्यों में कफ सिरप की वजह से बच्चों की मौत शर्मनाक एवं त्रासदीपूर्ण है।

दो राज्यों राजस्थान और मध्य प्रदेश में कफ सिरप से जुड़ी बच्चों की मौत की घटनाएं देश की दवा नियामक व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े करती हैं। यह केवल एक चिकित्सा त्रुटि या आकस्मिक दुर्घटना नहीं, बल्कि उस तंत्र की विफलता का प्रतीक है जिस पर जनता अपने जीवन की रक्षा के लिए भरोसा करती है। दवा जैसी जीवनदायी वस्तु में भी जब लालच, लापरवाही या भ्रष्टाचार घुसपैठ कर जाते हैं तो वह अमृत भी विष बन जाता है। बच्चों की मासूम जानें जब घटिया या मिलावटी दवा के कारण चली जाती हैं, तो यह केवल परिवारों की नहीं, बल्कि पूरे समाज की नैतिकता एवं विश्वास की मृत्यु होती है। कफ सिरप में पाए गए विषैले तत्व-जैसे डाइएथिलीन ग्लाइकॉल या एथिलीन ग्लाइकॉल, पहले भी कई देशों में सैकड़ों बच्चों की जान ले चुके हैं। फिर भी बार-बार ऐसे हादसे होना इस बात का प्रमाण है कि भारत की दवा नियामक व्यवस्था में संरचनात्मक खामियां बनी हुई हैं। सवाल है कि पिछली गलतियों से क्या सीखा गया? भारत में बने कफ सिरप पहले भी सवालों में आ चुके हैं। 2022 में गाम्बिया में कई बच्चों की मौत के बाद डब्ल्यूएचओ ने एक भारतीय कंपनी के कफ सिरप को लेकर चेतावनी जारी की थी। इसके बाद भी कई और जगहों से इसी तरह की शिकायत आई। दवाओं के उत्पादन में भारत दुनिया में तीसरे नंबर पर है। करीब 200 देशों में यहां से दवाएं निर्यात होती हैं और जेनेरिक दवाएं सबसे ज्यादा यहीं बनती हैं। इन उपलब्धियों के बीच इन दो प्रमुख राज्यों में कफ सिरप की वजह से बच्चों की मौत शर्मनाक एवं त्रासदीपूर्ण है। इससे स्पष्ट है कि दवा के क्षेत्र में जिस तरह की निगरानी, मानक और सुरक्षा उपायों की जरूरत है, उसमें कोताही बरती जा रही है। दवा के रूप में जहर धडल्ले से मासूमों की मौत का कारण बन रहा है। इस घटना सामने आने के बाद कार्रवाई का दौर भले ही जारी है। दवाएं वापस ली गई हैं, केस

दर्ज हुआ है और नैशनल रेगुलेटर अथॉरिटी ने कई राज्यों में जांच की है। इन घटनाओं से साफ है कि दवा निर्माण की प्रक्रिया में कच्चे माल के स्रोत से लेकर तैयार उत्पाद की गुणवत्ता जांच तक हर स्तर पर लापरवाही व्याप्त है। कई कंपनियां लागत घटाने के लिए औद्योगिक ग्रेड के सॉल्वेंट या रसायनों का प्रयोग कर लेती हैं जो मानव उपभोग के लिए निषिद्ध होते हैं। वहीं निरीक्षण और परीक्षण की सरकारी व्यवस्था न केवल कमज़ोर है बल्कि अक्सर प्रभावशाली कंपनियों के दबाव में निष्क्रिय भी हो जाती है। राज्य और केंद्र स्तर के दवा-नियामक विभागों में पर्याप्त संसाधन और तकनीकी क्षमता का अभाव है, जिससे समय पर निगरानी और सैंपल परीक्षण संभव नहीं हो पाता। जब निरीक्षण औपचारिकता बन जाए और रिपोर्टें खरीद-फरोख्त की वस्तु बन जाएं, तब ऐसी त्रासदियां स्वाभाविक हैं। तमिलनाडु की दवा कंपनी श्रीसन फार्मास्युटिकल्स के 'कोल्ड्रिफ' कफ सिरप के नमूने में 48.6 प्रतिशत डाई एथिलीन ग्लाइकॉल मिला है, जबकि अंतरराष्ट्रीय मानक के अनुसार इसकी मात्रा 0.10 प्रतिशत से अधिक नहीं होनी चाहिए। यह एक खतरनाक इंडस्ट्रियल केमिकल है, जिसका इस्तेमाल गाड़ियों और मशीनों में होता है। इसकी वजह से पीड़ित बच्चों की किडनी फेल हो गई।

इसे भी पढ़ें: कफ सिरप से बच्चों की मौत की खबरें चिंताजनक, दवाओं की गुणवत्ता पर निगरानी रखना सबसे बड़ी जरूरत

इन घटनाओं ने न केवल स्वास्थ्य प्रशासन की विश्वसनीयता को चोट पहुंचाई है बल्कि भारत की वैश्विक छवि पर भी धब्बा लगाया है। पिछले वर्षों में अफ्रीकी देशों में भी भारतीय सिरप से हुई मौतों के बाद कई देशों ने हमारे फार्मा उत्पादों पर प्रतिबंध लगाया था। अब घरेलू स्तर पर घटित ऐसी घटनाएं यह दर्शाती हैं कि हमने उन हादसों से कोई सबक नहीं लिया। दुनिया के सबसे बड़े जेनेरिक दवा उत्पादक देश के रूप में भारत को यह मानना होगा कि केवल उत्पादन की मात्रा नहीं, बल्कि गुणवत्ता ही हमारी असली ताकत होनी चाहिए। इस संकट का सबसे पीड़ादायक पहलू यह है कि इसका शिकार वे मासूम बच्चे बने जिनकी प्रतिरोधक क्षमता अभी विकसित नहीं हुई थी और जिनकी जीवन रक्षा का उत्तरदायित्व समाज और राज्य पर है। इन मौतों की नैतिक जिम्मेदारी केवल दोषी कंपनियों पर नहीं, बल्कि उस पूरे तंत्र पर है जिसने नियमन और नैतिकता की आंखें मूंद लीं। दवाओं में मिलावट या गलत प्रमाणपत्र देना कोई साधारण अपराध नहीं बल्कि मानवता के खिलाफ किया गया घोर अपराध है। इस पर कड़े से कड़ा दंड होना चाहिए ताकि भविष्य में कोई भी निर्माता या अधिकारी ऐसी हरकत करने से पहले सौ बार सोचे।

भारत के फार्मास्युटिकल मार्केट का आकार लगभग 60 अरब डॉलर है। इसका बड़ा हिस्सा छोटी कंपनियों के पास है। सीडीएसीओ ने इस साल अप्रैल की अपनी रिपोर्ट में बताया था कि ज्यादातर छोटी और मझोली कंपनियों की दवाएं जांच में तयशुदा मानक से कमतर पाई गईं।

इस जांच में 68 प्रतिशत एमएसएमई फेल हो गई थीं। इससे पहले, जब केंद्रीय एजेंसी ने 2023 में जांच की, तब भी 65 प्रतिशत कंपनियों की दवाएं सब-स्टैंडर्ड मिली थीं। प्रश्न है कि यह तथ्य सामने आने के बाद आखिर सरकार क्या सोच कर इन दवाओं को बाजार में विक्रय क्यों जारी रहने दिया? क्यों ऐसे हादसे होने दिये जाते रहे? यह आवश्यक है कि दवा उद्योग में कच्चे माल की ट्रेसबिलिटी सुनिश्चित की जाए, हर बैच की जांच रिपोर्ट सार्वजनिक रूप से उपलब्ध हो और दवाओं के मानक अंतरराष्ट्रीय स्तर के हों। केंद्र और राज्य सरकारों को ड्रग इंस्पेक्टरों की संख्या और प्रयोगशालाओं की क्षमता बढ़ानी चाहिए। हर कंपनी के लाइसेंस नवीनीकरण के समय उसकी पिछली गुणवत्ता रिपोर्ट और परीक्षण परिणामों की समीक्षा की जानी चाहिए। जिन कंपनियों ने सुरक्षा मानकों का उल्लंघन किया है, उनके लाइसेंस तत्काल रद्द कर दिए जाने चाहिए और शीर्ष प्रबंधन को व्यक्तिगत रूप से उत्तरदायी ठहराया जाना चाहिए। केवल प्रशासनिक कार्रवाई पर्याप्त नहीं, बल्कि इन मामलों में आपराधिक जिम्मेदारी तय करना भी जरूरी है।

इसके साथ ही चिकित्सा जगत और समाज को भी आत्मचिंतन करना चाहिए। डॉक्टरों को यह समझना होगा कि शिशुओं को ओटीसी- ऑवर दी कॉउन्टर दवाएं देना कितना खतरनाक हो सकता है। सरकार द्वारा जारी परामर्श और चेतावनियों को जमीनी स्तर तक पहुंचाने की जरूरत है। मीडिया को भी सनसनी से ऊपर उठकर जनता को जागरूक करने की जिम्मेदारी निभानी होगी। इन त्रासदियों को केवल समाचार बनाकर भुला देना नहीं, बल्कि उन्हें स्वास्थ्य-सुधार के आंदोलन में बदलना समय की मांग है। क्योंकि सरकारी अनुमान से इस साल देश का दवा निर्यात 30 अरब डॉलर को पार कर जाएगा। वहीं, 2030 तक फार्मा मार्केट के 130 अरब डॉलर तक पहुंचने की उम्मीद है। लेकिन, इसके साथ चुनौतियां भी बढ़ रही हैं। दवाओं की जांच और निगरानी अभी तक की कमजोर कड़ी साबित हुई है। केंद्रीय और राज्य की नियामक एजेंसियों को ज्यादा बेहतर तालमेल के साथ, पारदर्शिता, ईमानदारी और ज्यादा तेजी से काम करने की जरूरत है, क्योंकि यह मामला केवल इकॉनमी या देश की छवि ही नहीं, अनमोल जिंदगियों से जुड़ा है।

अंततः यह घटना हमें याद दिलाती है कि जीवन रक्षा के साधनों में जब नैतिकता का अभाव हो जाता है तो प्रगति की समूची इमारत ध्वस्त हो जाती है। दवा उद्योग में पारदर्शिता, जिम्मेदारी और मानवीय संवेदनशीलता को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी होगी। सरकार और समाज दोनों को मिलकर यह सुनिश्चित करना होगा कि किसी भी बच्चे की जान किसी घटिया या मिलावटी दवा के कारण न जाए। जब तक दवा बनाने वाला और दवा बांटने वाला अपनी जिम्मेदारी को धर्म, करुणा, विश्वास और ईमानदारी की दृष्टि से नहीं देखेगा, तब तक ऐसी त्रासदियां दोहराई जाती रहेंगी। इसलिए अब वक्त आ गया है कि हम दवा नहीं, दायित्व बनाएं, नियमन नहीं, निष्ठा पैदा करें और इस मानवता विरोधी अपराध के लिए दोषियों को उदाहरण स्वरूप कठोरतम दंड दें ताकि भविष्य में जीवन रक्षक औषधि फिर से विश्वास की प्रतीक बन सके।

प्रेरणा

अडिग विश्वास की शक्ति

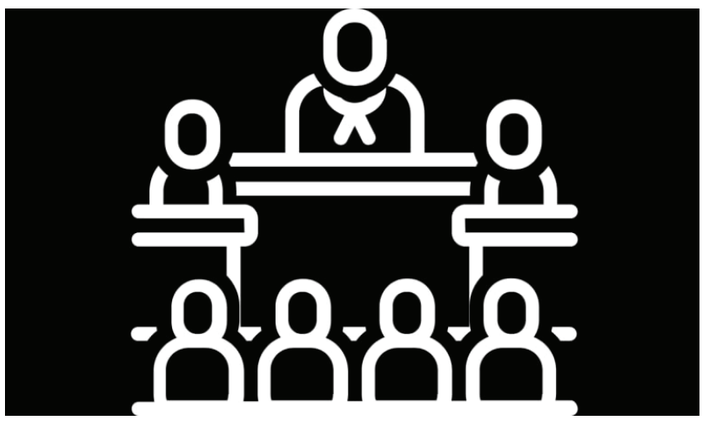

मार्टिन लूथर किंग का जीवन इस बात का साक्षात उदाहरण है कि जब किसी मनुष्य के भीतर विश्वास की लौ प्रज्वलित हो जाती है, तो कोई भी अन्याय, कोई भी अत्याचार उसे झुका नहीं सकता। वे उस समय जन्मे थे जब अमेरिका में अश्वेत लोगों के साथ गोरों जैसा व्यवहार नहीं किया जाता था। रंग के कारण मनुष्य की पहचान तय होती थी, और यह भेदभाव इतना गहरा था कि काले लोगों को बसों में पीछे बैठने, होटलों में अलग हिस्सों में रहने और स्कूलों में अलग पढ़ने के लिए मजबूर किया जाता था। समाज में यह असमानता इतनी सामान्य हो चुकी थी कि किसी को भी यह उम्मीद नहीं थी कि कभी यह व्यवस्था बदलेगी। बचपन से ही मार्टिन ने देखा कि उनके अपने माता-पिता और समाज के लोग गोरों के अपमान को सहते रहते हैं। एक बार वे अपने एक गोरे मित्र के साथ खेल रहे थे, तो उसके पिता ने उन्हें डांटकर दूर कर दिया, क्योंकि वह नहीं चाहता था कि उसका बेटा किसी अश्वेत के साथ खेले। यह घटना बालक मार्टिन के मन में गहरे उतर गई। उन्हें यह एहसास हुआ कि यह केवल उनके साथ नहीं, बल्कि पूरी मानवता के साथ अन्याय है। यही क्षण था जब उनके भीतर क्रांति का बीज अंकुरित हुआ।

जैसे-जैसे वे बड़े हुए, उन्होंने समाज में व्याप्त इस अन्याय को मिटाने का प्रण लिया। उन्होंने महात्मा गांधी के अहिंसा और सत्य के सिद्धांतों को अपनाया। उन्हें विश्वास था कि हिंसा से नहीं, बल्कि प्रेम और सत्य से ही दुनिया बदली जा सकती है। उन्होंने कहा था कि "अंधकार को अंधकार से नहीं मिटाया जा सकता, उसे केवल प्रकाश ही समाप्त कर सकता है। नफ़रत को नफ़रत से नहीं मिटाया जा सकता, उसे केवल प्रेम ही मिटा सकता है।" यह उनके जीवन का मूल मंत्र बन गया।

उन्होंने अपने आंदोलन की शुरुआत बहुत छोटे स्तर से की। पहले तो लोग उन पर हँसते थे, उनका मज़ाक उड़ाते थे, उन्हें पागल कहते थे। लेकिन वे अडिग रहे। उन्होंने कहा, "जब पूरी सीढ़ियाँ दिखाई नहीं देतीं, तब भी विश्वास के साथ पहला कदम बढ़ाओ।" यही उनका जीवन दर्शन था। धीरे-धीरे लोगों ने उनकी बातों में सच्चाई देखी। हजारों लोग उनसे जुड़ने लगे। उन्होंने सत्याग्रह और शांतिपूर्ण प्रदर्शन के माध्यम से दुनिया को दिखाया कि बिना हिंसा किए भी क्रांति लाई जा सकती है।

उनके "आई हैव अ ड्रीम" भाषण ने मानव इतिहास में एक नई चेतना जगा दी। उन्होंने कहा कि उनका सपना है — "एक दिन यह देश अपने सच्चे आदर्शों पर खरा उतरेगा, और सभी मनुष्य समान अधिकारों के साथ जिएंगे।" यह केवल एक सपना नहीं था, बल्कि मानवता के भविष्य की पुकार थी।

हालाँकि उनका संघर्ष आसान नहीं था। उन्हें जेल में डाला गया, उनके घर पर हमले हुए, उन्हें मार डालने की धमकियाँ दी गईं, लेकिन वे डरे नहीं। हर बार जब वे गिरते, तो विश्वास उन्हें फिर से खड़ा कर देता। वे मानते थे कि विश्वास वह ऊर्जा है जो इंसान को निराशा की गहराई से निकालकर प्रकाश की ओर ले जाती है।

धीरे-धीरे उनका आंदोलन इतना बड़ा बन गया कि पूरी दुनिया ने उसका असर महसूस किया। अंततः अमेरिका की सरकार को झुकना पड़ा, और अश्वेतों को समान अधिकार मिल गए। यह केवल एक कानून की जीत नहीं थी, बल्कि मानवता की विजय थी।

मार्टिन लूथर किंग की कहानी आज भी यह संदेश देती है कि अगर मन में अडिग विश्वास हो, तो दुनिया की कोई ताकत आपके रास्ते को रोक नहीं सकती। परिस्थितियाँ चाहे कितनी भी कठिन क्यों न हों, अगर इंसान अपने लक्ष्य में विश्वास रखे और सच्चाई के पथ पर अडिग रहे, तो असंभव भी संभव बन जाता है।

विश्वास वही प्रकाश है जो अंधकार में भी राह दिखाता है, वही शक्ति है जो मनुष्य को निराशा से उठाकर सफलता की ऊँचाइयों तक ले जाती है। मार्टिन लूथर किंग ने यह सिद्ध कर दिया कि सच्चा विश्वास केवल शब्द नहीं, बल्कि वह आत्मबल है जो इतिहास बदल सकता है और मानवता को नई दिशा दे सकता है।

प्रधानमंत्री मोदी का 25 वर्षों का सफर सिर्फ सत्ता में बने रहने की नहीं बल्कि संकल्प से सिद्धि की कहानी है

7 अक्टूबर 2001, यह वह दिन था जब गुजरात विधानसभा के प्रांगण में एक साधारण स्वयंसेवक ने मुख्यमंत्री पद की शपथ ली थी। नरेंद्र मोदी का राजनीतिक सफर वहीं से प्रारंभ हुआ जो आज 25 वर्ष बाद भारतीय राजनीति के सबसे निर्णायक, सबसे प्रभावशाली नेतृत्व की कहानी बन चुका है। प्रधानमंत्री मोदी ने इस अवसर पर अपने सोशल मीडिया संदेश में न केवल अतीत को याद किया, बल्कि "विकसित भारत" के अपने सपने को दोहराया। उन्होंने लिखा— "जनता के आशीर्वाद से मैं सरकार के मुखिया के रूप में सेवा के अपने 25वें वर्ष में प्रवेश कर रहा हूं। मेरा हर प्रयास देश के अंतिम व्यक्ति तक विकास पहुंचाने के लिए रहा है।"

देखा जाये तो 2001 में गुजरात का नेतृत्व संभालने वाले मोदी ने उस राज्य को उद्योग, इंफ्रास्ट्रक्चर और प्रशासनिक सुधारों का मॉडल बनाया। 2002 के बाद गुजरात ने जिस तीव्र गति से विकास किया, उसने पूरे देश में "गुजरात मॉडल" की चर्चा शुरू की। बिजली, जल प्रबंधन, कृषि उत्पादन और निवेश में राज्य ने नए आयाम स्थापित किए। यही मॉडल आगे चलकर 2014 में नरेंद्र मोदी को देश की सर्वोच्च जिम्मेदारी तक लेकर आया।

जब उन्होंने 2014 में प्रधानमंत्री पद की शपथ ली, तब देश आर्थिक ठहराव, भ्रष्टाचार और वैश्विक अविश्वास से घिरा था। मोदी ने इस ठहराव को तोड़ते हुए 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास' के मंत्र के साथ नई ऊर्जा भरी। उनके नेतृत्व में भारत ने न केवल आर्थिक मोर्चे पर बल्कि अंतरराष्ट्रीय मंच पर भी आत्मविश्वास की नई परिभाषा गढ़ी।

प्रधानमंत्री मोदी का 25 वर्षों का यह सफर सिर्फ सत्ता में बने रहने की कहानी नहीं है; यह संकल्प से सिद्धि की कहानी है। पिछले दशक में भारत ने अनेक ऐतिहासिक परिवर्तन देखे। डिजिटल इंडिया ने शासन और नागरिकों के बीच पारदर्शिता और गति सुनिश्चित की। स्वच्छ भारत मिशन ने सामाजिक आंदोलन का रूप लिया। उज्ज्वला योजना से करोड़ों गरीब परिवारों की रसोई में धुआंमुक्त जीवन पहुंचा। मेक इन इंडिया, स्टार्टअप इंडिया और आत्मनिर्भर भारत ने अर्थव्यवस्था को नवाचार और आत्मविश्वास की दिशा दी। चंद्रयान-3 और गगनयान मिशन ने विज्ञान में भारत की साख को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया। आज भारत दुनिया की पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है और विश्व बैंक, IMF, तथा विश्व आर्थिक मंच तक इसे "ग्लोबल ब्राइट स्पॉट" कह रहे हैं।

इसके अलावा, मोदी युग की एक सबसे उल्लेखनीय उपलब्धि भारत की आक्रामक लेकिन संतुलित विदेश नीति रही है। प्रधानमंत्री मोदी ने अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत की आवाज़ को नई प्रतिष्ठा दिलाई। G20 शिखर सम्मेलन की सफल मेजबानी ने भारत को 'विश्व के विश्वास' के केंद्र में ला खड़ा किया। इंडो-पैसिफिक रणनीति और क्वॉड गठबंधन में भारत की भूमिका अब निर्णायक है। रूस-यूक्रेन युद्ध के बीच मोदी का "यह युद्ध का युग नहीं है" वाला संदेश आज वैश्विक कूटनीति की मिसाल बन चुका है। इसके अलावा, अफ्रीका, खाड़ी देशों और दक्षिण एशिया में भारत ने न केवल व्यापारिक बल्कि सांस्कृतिक और मानवीय संबंधों को भी मजबूत किया है। मोदी की विदेश नीति की खासियत यह है कि उन्होंने 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के दर्शन को आधुनिक कूटनीति में ढाल दिया— जहां भारत न किसी के सामने झुकता है, न किसी को झुकाता है।

आज, प्रधानमंत्री मोदी ने अपने संदेश में अपनी माँ की सलाह का उल्लेख करते हुए कहा— "उन्होंने कहा था, दो बातें कभी मत भूलना— गरीबों के लिए काम करना और कभी रिश्वत मत लेना।" यही मूल्य आज उनके राजनीतिक जीवन की धुरी हैं। उनकी 'गरीब कल्याण' नीतियों से लेकर 'न्यू इंडिया' की दृष्टि तक— हर कदम जनता के सशक्तिकरण की दिशा में रहा है। आज मोदी 25 वर्षों के इस सार्वजनिक जीवन में उस दौर के नेता हैं जिन्होंने न केवल सत्ता को सेवा का माध्यम बनाया, बल्कि भारतीय राजनीति में 'गवर्नेंस का धर्म' स्थापित किया।

देखा जाये तो 25 वर्षों की यात्रा में नरेंद्र मोदी केवल एक व्यक्ति नहीं, बल्कि एक विचार बन चुके हैं— आत्मनिर्भरता, राष्ट्रगौरव और जनता के सशक्तिकरण का विचार। उनकी प्रतिबद्धता, वैश्विक दृष्टि और अडिग राष्ट्रवाद ने भारत को एक ऐसी राह पर डाल दिया है जहाँ "विकसित भारत" अब सपना नहीं, लक्ष्य बन चुका है। जैसे-जैसे देश 2047 की ओर बढ़ रहा है, प्रधानमंत्री मोदी का यह संदेश और प्रासंगिक हो उठता है— "सेवा ही सम्मान है, और भारत का उत्थान ही मेरा धर्म।"

अभियान

मृत्यु पर विजय पाने वाला प्रेम

भारत की पौराणिक कथाओं में अनेक प्रेम गाथाएँ हैं, परंतु सावित्री और सत्यवान की कथा सबसे अनोखी और अमर है। यह केवल पति-पत्नी के प्रेम की नहीं, बल्कि उस अदम्य विश्वास, दृढ़ निश्चय और धर्मनिष्ठा की कहानी है, जिसने स्वयं मृत्यु को भी परास्त कर दिया। सावित्री का प्रेम इतना शुद्ध और निस्वार्थ था कि यमराज जैसे कठोर देवता को भी उसके आगे झुकना पड़ा।

बहुत समय पहले मद्र देश के राजा अश्वपति राज्य करते थे। वे परोपकारी, धर्मप्रिय और न्यायप्रिय राजा थे, परंतु उनके जीवन में एक कमी थी — उनके कोई संतान नहीं थी। वर्षों तक वे अपनी पत्नी के साथ देवी सावित्री की आराधना करते रहे और अंततः देवी ने प्रसन्न होकर उन्हें वरदान दिया कि उन्हें एक तेजस्विनी कन्या प्राप्त होगी। समय बीतने पर रानी ने एक अत्यंत रूपवती, तेजस्विनी और बुद्धिमान कन्या को जन्म दिया, जिसका नाम देवी के नाम पर ही सावित्री रखा गया।

सावित्री बाल्यकाल से ही विलक्षण प्रतिभा की धनी थीं। जब वह युवावस्था में पहुँचीं तो उसका सौंदर्य और तेज चारों ओर फैल गया। अनेक राजकुमार उससे विवाह का प्रस्ताव लेकर आए, परंतु कोई भी उसके योग्य नहीं लगा। तब राजा अश्वपति ने अपनी पुत्री से कहा कि वह स्वयं अपनी पसंद का वर खोजे। पिता की आज्ञा पाकर सावित्री तीर्थ यात्रा पर निकल पड़ी। उसने अनेक देशों की यात्रा की और अंततः एक दिन जंगल में रहते हुए एक तेजस्वी, सत्यप्रिय और वीर युवक से मिली — उसका नाम था सत्यवान।

सत्यवान राजा द्युमत्सेन का पुत्र था, जो कभी एक समृद्ध राज्य के राजा थे, परंतु अंधत्व और भाग्यवश अपना राज्य खोकर वन में रहने लगे थे। सत्यवान अपने अंधे माता-पिता की सेवा में जीवन बिताता था। सावित्री के मन में उसे देखकर गहरा सम्मान और प्रेम उमड़ आया। वह जानती थी कि यही उसका नियत जीवनसाथी है। वह पिता के पास लौटी और सत्यवान से विवाह की इच्छा प्रकट की। उसी समय देवर्षि नारद वहाँ आए और बोले, "राजन, सत्यवान जितना गुणवान और तेजस्वी है, उतना ही दुर्भाग्यशाली भी है। उसके जीवन के केवल बारह महीने शेष हैं।" यह सुनकर राजा अत्यंत दुखी हुए और सावित्री को समझाने लगे कि वह किसी और वर का चयन करे। लेकिन सावित्री ने दृढ़ स्वर में कहा — "पिता, मनुष्य का निर्णय एक बार होता है, मैं सत्यवान को ही अपना पति मान चुकी हूँ। अब उससे हटना अधर्म होगा।"

राजा ने विवश होकर अनुमति दे दी और सावित्री का विवाह विधिपूर्वक सत्यवान से कर दिया गया। विवाह के बाद सावित्री अपने ससुराल आई और अंधे सास-ससुर की अत्यंत श्रद्धा से सेवा करने लगी। समय तेजी से बीतता गया और वह दिन आ पहुँचा जिसे नारद जी ने सत्यवान के जीवन का अंतिम दिन बताया था। उस दिन सावित्री ने कठोर व्रत रखा, जल तक नहीं पिया। जब सत्यवान लकड़ी काटने जंगल जाने लगे तो सावित्री भी उनके साथ गई।

जंगल में पेड़ काटते समय अचानक सत्यवान के सिर में तेज दर्द हुआ और वह भूमि पर गिर पड़े। सावित्री ने उनका सिर अपनी गोद में रखा, और तभी यमराज वहाँ प्रकट हुए। उन्होंने सत्यवान की आत्मा को अपने पाश में बाँधा और दक्षिण दिशा की ओर बढ़ने लगे। सावित्री अपने पति का शरीर छोड़कर उनके पीछे-पीछे चलने लगी।

यमराज ने पीछे मुड़कर कहा, "देवी, तुम अब लौट जाओ। यह मृत्यु का मार्ग है, जहाँ जीवित प्राणी नहीं आ सकते।" सावित्री ने नम्रता से उत्तर दिया — "मैं अपने पति के साथ चलने का धर्म निभा रही हूँ। जब तक वे नहीं रुकेंगे, मैं भी नहीं रुकूँगी।" यमराज उसकी भक्ति से प्रभावित हुए और बोले — "देवी, मैं तुम्हारी निष्ठा से प्रसन्न हूँ, कोई वर मांगो।" सावित्री ने कहा — "मेरे सास-ससुर अंधे हैं, उन्हें दृष्टि प्राप्त हो।" यमराज ने तथास्तु कहा और आगे बढ़ गए।

सावित्री फिर भी नहीं रुकीं। यमराज ने कहा — "अब लौटो देवी, तुमने वर पा लिया।" सावित्री बोली — "पति के मार्ग पर चलना ही पत्नी का धर्म है, मैं पीछे नहीं हट सकती।" यमराज फिर प्रसन्न हुए और बोले — "एक और वर मांगो।" सावित्री ने कहा — "मेरे ससुर को उनका खोया हुआ राज्य वापस मिले।" यमराज ने यह वर भी दे दिया।

सावित्री तब भी उनके पीछे चलती रही। तीसरी बार यमराज ने कहा — "हे देवी, अब तो लौट जाओ, तुमने बहुत वरदान पा लिए हैं।" सावित्री ने मुस्कराते हुए कहा — "यदि आप सचमुच मुझसे प्रसन्न हैं, तो मुझे सौ पुत्रों की माँ बनने का वरदान दीजिए।" यमराज ने बिना सोचे कहा — "तथास्तु।"

सावित्री ने विनम्रता से उत्तर दिया — "प्रभु, आपने मुझे सौ पुत्रों की माँ बनने का वरदान दिया, परंतु यह संभव कैसे होगा जब मेरे पति ही जीवित नहीं हैं?" यह सुनकर यमराज ठिठक गए। उनके मुख पर आश्चर्य था। उन्होंने देखा कि इस स्त्री की बुद्धि, निष्ठा और धर्म का पालन अतुलनीय है। वे बोले — "हे सती, तुम्हारे समान पतिव्रता कोई नहीं है। तुम्हारे धर्म और प्रेम ने मुझे परास्त कर दिया। तुम्हारा पति अब जीवित रहेगा।"

इतना कहते ही यमराज ने अपने पाश से सत्यवान की आत्मा को मुक्त कर दिया। सावित्री अपने पति के पास लौटी तो वह फिर से जीवित हो उठा। कुछ ही दिनों बाद सत्यवान के पिता की दृष्टि लौट आई और उनका राज्य भी पुनः प्राप्त हुआ।

उस दिन से ही वट सावित्री व्रत की परंपरा आरंभ हुई। इस दिन विवाहित स्त्रियाँ वट वृक्ष की पूजा करती हैं और सावित्री की भाँति अपने पति के दीर्घायु, सुख और समृद्धि की कामना करती हैं।

सावित्री और सत्यवान की यह कथा केवल प्रेम की नहीं, बल्कि उस अटूट विश्वास की प्रतीक है जो मृत्यु जैसी अपरिहार्य शक्ति को भी झुका देता है। यह कहानी बताती है कि सच्चा प्रेम भक्ति बन जाए तो वह ब्रह्मांड की सबसे बड़ी शक्ति बन जाता है। सावित्री ने यह सिद्ध कर दिया कि जब विश्वास अटल हो और प्रेम निष्कलंक हो, तो मृत्यु भी जीवन के आगे सिर झुका देती है।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH

पद्मश्री डॉ. गणपत पटेल की सफलता गाथा : साधारण शुरुआत से विश्वस्तरीय उद्योगपति और शिक्षा क्षेत्र के एक दूरदर्शी नेता तक का सफर

गणपत यूनिवर्सिटी में वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस के आयोजन से पद्मश्री डॉ. गणपत पटेल की समृद्ध विरासत उजागर होगी

गांधीनगर, 07 अक्टूबर : उत्तर गुजरात के मेहसाणा जिले के भुणाव गांव में एक साधारण शुरुआत से लेकर कैलिफोर्निया में अध्ययन तक डॉ. गणपत पटेल की सफलता गाथा प्रेरणादायी है। पद्मश्री पुरस्कार विजेता डॉ. गणपत पटेल ने शिक्षा क्षेत्र में अपने स्वप्न को साकार करने के लिए 'गणपत यूनिवर्सिटी' की स्थापना की। वे एक दूरदर्शी नेता हैं, जो अपने बहुमूल्य योगदान से समाज को सशक्त बनाने के लिए कार्य कर रहे हैं।

गणपत यूनिवर्सिटी में वीजीआरसी का आयोजन

राज्य सरकार की नई पहल के रूप में उत्तर गुजरात क्षेत्र के लिए 'वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस' (वीजीआरसी) का आयोजन मेहसाणा की गणपत यूनिवर्सिटी में होने जा रहा है। गणपत यूनिवर्सिटी नवाचार का एक प्रतिष्ठित केंद्र है। इस दो दिवसीय कॉन्फ्रेंस में उद्योग और शिक्षा क्षेत्र के अग्रणी महानुभाव एक साथ, एक मंच पर इकट्ठे होंगे और सेमिनार एवं पैनल चर्चाओं के माध्यम से अपने विचार प्रस्तुत करेंगे।

उत्कृष्टता का सफर

12 जनवरी, 1945 को मेहसाणा के भुणाव गांव में जन्मे डॉ. पटेल ने अपनी शिक्षा की शुरात गांव के प्राथमिक स्कूल की। इसके बाद उन्होंने अहमदाबाद के एम.जी. साइंस कॉलेज में पढ़ाई पूरी की और इंजीनिरिंग की उच्च शिक्षा के लिए अमेरिका गए। वहां उन्होंने आईयोवा स्टेट यूनिवर्सिटी और बाद में 1969 में कैलिफोर्निया की पॉलिटेक्निक यूनिवर्सिटी, पोमोना से इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी की।

डॉ. पटेल को मिले सम्मान और उनके मूल्य

डॉ. पटेल को शिक्षा और सामाजिक क्षेत्र में उनके योगदान के लिए भारत सरकार ने उन्हें 2019 में साहित्य और शिक्षा क्षेत्र के लिए पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया है। इसके अलावा, उन्हें अमेरिका की 'अमेरिकन सोसाइटी ऑफ इंजीनियर्स ऑफ इंडियन ओरिजिन' की ओर से लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड और काल पोली यूनिवर्सिटी, पोमोओ की ओर से 2018 में डिस्टिंग्विश एलुमनस अवॉर्ड से नवाजा गया।

डॉ. पटेल ने अपने करियर की शुरुआत डिजाइन इंजीनियर के रूप में की और अमेरिका की कई अग्रणी कंपनियों के साथ कार्य किया, जिनमें यूएस एविएशन इंडस्ट्री, लॉकहीड (अजूजा), कल्वर सिटी में एबोट ट्रांजिस्टर लैब और जानी मानी कंप्यूटर सिस्टम मैन्युफैक्चरिंग कंपनी बरोज कॉर्पोरेशन शामिल हैं। हालांकि, उनका स्वप्न एक उद्यमी बनने का था। 1978 में उन्होंने चेरोकी इंटरनेशनल की स्थापना की, जो आगे चलकर एक सफल वैश्विक कंपनी बनी। फिर 2004 में उन्होंने इस कंपनी को जनरल इलेक्ट्रिक (जीई) को बेच दिया। शिक्षा के स्वप्न को साकार करने के लिए उन्होंने 2005 में 'गणपत यूनिवर्सिटी' की स्थापना की, ताकि युवाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिल सके और सामाजिक परिवर्तन लाया जा सके। आज, गणवत यूनिवर्सिटी उनके विजन और समर्पण का प्रतीक बन गई है। यूनिवर्सिटी का परिसर 300 एकड़ से अधिक क्षेत्र में फैला हुआ है, जिसमें अत्याधुनिक प्रयोगशालाएं, नवाचार केंद्र, डिजिटल कक्षाएं और पर्यावरण-अनुकूल इंफ्रास्ट्रक्चर मौजूद है। गुजरात सरकार ने इसे उत्कृष्टता केंद्र (सेंटर ऑफ एक्सीलेंस) के रूप में मान्यता दी है, साथ ही इसे नेशनल असेसमेंट एंड एक्रेडिटेशन काउंसिल (एनएएसी) से 'ए' ग्रेड और क्वाक्वेरेली साइमंड्स-क्यूएस आई-जीएयूजीई की ओर से डायमंड रेटिंग भी प्राप्त है।

गणपत यूनिवर्सिटी माननीय प्रधानमंत्री के 'विकसित भारत@2047' के विजन और गुजरात सरकार के ज्ञान-आधारित, वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी अर्थव्यवस्था बनाने के लक्ष्य का समर्थन करती है। आज के उद्योगों के लिए प्रशिक्षण और नए कौशल प्रदान करने के लिए यूनिवर्सिटी विभिन्न सेक्टर स्कूल काउंसिल और एनएसडीसी इंटरनेशनल के साथ निकटता से जुड़कर कार्य कर रही है। यूनिवर्सिटी ने टाटा मोटर्स, मारुति सुजुकी, एलान्फोचिप्स, टीसीएस, बॉश रेक्सरोथ, बजाज ऑटो और एमक्योर फार्मा जैसी कंपनियों के साथ गहन साझेदारी की है, जिसके चलते विद्यार्थियों को उद्योगों से संबंधित वास्तविक अनुभव प्राप्त करने में मदद मिलती है। गणपत यूनिवर्सिटी गुजरात का एकमात्र ऐसा संस्थान है जो मरीन इंजीनियरिंग में बी.टेक. और नॉटिकल साइंस में बीएससी जैसे मैरीटाइम कार्यक्रमों की पेशकश करता है। इसमें एक अनोखा शिप-इन-कैम्पस और 360 डिग्री नेविगेशन सिम्युलेशन सेंटर है, जिसे नौवहन महानिदेशालय की ओर से ए-1 ग्रेड प्राप्त हुआ है।

आगामी वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस में शिक्षा और उद्यमिता के प्रति डॉ. गणपत पटेल के जीवनभर के समर्पण को एक बार फिर उजागर किया जाएगा। गणपत यूनिवर्सिटी परिसर में इस भव्य आयोजन के साथ ही डॉ. पटेल की सफलता गाथा सभी के लिए प्रेरणादायी बनेगी।

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, गुजरात और छत्तीसगढ़ के 18 जिलों में व्याप्त चार मल्टीट्रैकिंग परियोजनाओं को मंजूरी दी, भारतीय रेलवे का मौजूदा नेटवर्क लगभग 894 किलोमीटर बढ़ेगा

- 24,634 करोड़ रुपये की कुल अनुमानित लागत वाली परियोजनाएं 2030-31 तक पूरी होंगी
- Posted On: 07 OCT 2025 3:09PM by PIB Delhi
- https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2175831
- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में मंत्रिमंडल की आर्थिक मामलों की समिति ने आज रेल मंत्रालय की 24,634 करोड़ रुपये के परिव्यय की चार परियोजनाओं को मंजूरी दी। इनमें:

I.महाराष्ट्र में वर्धा - भुसावल के बीच 314 किलोमीटर लंबी तीसरी और चौथी लाइन
II.महाराष्ट्र और छत्तीसगढ़ में 84 किलोमीटर लंबी गोंदिया-डोंगरगढ़ चौथी लाइन
III.गुजरात और मध्य प्रदेश में 259 किलोमीटर लंबी वडोदरा-रतलाम तीसरी और चौथी लाइन
IV.और, मध्य प्रदेश में 237 किलोमीटर लंबी इटारसी-भोपाल-बीना चौथी लाइन शामिल हैं

महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, गुजरात और छत्तीसगढ़ राज्यों के 18 जिलों में व्यापृत इन चार परियोजनाओं से भारतीय रेलवे के मौजूदा नेटवर्क में लगभग 894 किलोमीटर की वृद्धि होगी।

स्वीकृत मल्टी-ट्रैकिंग परियोजना से लगभग 3,633 गांवों, जिनकी जनसंख्या लगभग 85 लाख 84 हजार है, तथा दो आकांक्षी जिलों, विदिशा और राजनांदगांव तक संपर्क बढ़ेगा।

लाइन क्षमता में बढ़ोत्तरी से गतिशीलता बढ़ेगी, जिससे भारतीय रेलवे की परिचालन दक्षता और सेवा विश्वसनीयता में सुधार होगा। मल्टी ट्रैकिंग (पटरियों की संख्या बढ़ाना) प्रस्ताव परिचालन सुगम बनाने और भीड़भाड़ कम करने के लिए लाया गया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नए भारत के दृष्टिकोण के अनुरूप इन परियोजनाओं से क्षेत्र के लोगों का व्यापक विकास होगा, वे आत्मनिर्भर बनेंगे और उनके लिए रोज़गार/स्वरोज़गार के अवसर बढ़ेंगे।

पीएम-गति शक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान के तहत तैयार इन परियोजनाओं का उद्देश्य एकीकृत योजना और हितधारक परामर्श द्वारा मल्टी-मॉडल कनेक्टिविटी और लॉजिस्टिक दक्षता बढ़ाना है। ये परियोजनाएं लोगों, वस्तुओं और सेवाओं को निर्बाध संपर्क प्रदान करेंगी।

परियोजना खंड सांची, सतपुड़ा बाघ अभयारण्य, प्रागैतिहासिक मानव जीवन के प्रमाणों और प्राचीन शैल चित्रकला के लिए प्रसिद्ध भीमबेटका शैलाश्रय, हज़ारा जलप्रपात, नवेगांव राष्ट्रीय उद्यान आदि प्रमुख स्थलों को भी रेल संपर्क प्रदान करेगा, जो देश भर के पर्यटकों को आकर्षित करेगा।

यह कोयला, कंटेनर, सीमेंट, फ्लाई ऐश, खाद्यान्न, इस्पात आदि वस्तुओं के परिवहन के लिए भी आवश्यक मार्ग है। पटरियों की संख्या बढ़ाए जाने से प्रति वर्ष 78 मिलियन टन की अतिरिक्त माल ढुलाई होगी। रेलवे के पर्यावरण अनुकूल और ऊर्जा कुशल परिवहन माध्यम होने के कारण यह देश के जलवायु लक्ष्यों और परिचालन लागत कम करने, तेल आयात (28 करोड़ लीटर) में कमी लाने और कार्बन उत्सर्जन 139 करोड़ किलोग्राम कम करने में मदद करेगा, जो छह करोड़ वृक्षारोपण के बराबर है।

स्वच्छता पखवाड़ा 2025 के अंतर्गत अहमदाबाद मण्डल द्वारा स्वच्छ स्टेशन, स्वच्छ रेलगाड़ी एवं स्वच्छ पटरी पर विशेष ध्यान

पश्चिम रेलवे का अहमदाबाद मण्डल 01 से 15 अक्टूबर, 2025 तक स्वच्छता पखवाड़ा 2025 मना रहा है। इस दौरान स्टेशनों, कार्यालयों और ट्रेनों में स्वच्छता, सफाई और पर्यावरण जागरूकता को बढ़ावा देने हेतु विविध कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।

पखवाड़ा के दौरान अहमदाबाद मण्डल के प्रमुख स्टेशनों पर प्लेटफॉर्मों, सर्कुलेटिंग क्षेत्रों और यात्री सुविधाओं की सघन सफाई की गई। कूड़ेदानों की उपलब्धता एवं उनके रखरखाव का सत्यापन किया गया, वहीं नालियों, शौचालयों, पहुँच मार्गों, पैदल ऊपरी पुलों और प्रतीक्षालयों की गहन सफाई की गई। प्लास्टिक के उपयोग को हतोत्साहित करने के लिए जागरूकता अभियान चलाए गए तथा सूखे एवं गीले कचरे हेतु अलग-अलग डस्टबिन की व्यवस्था की गई। हरित ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए सौर

ऊर्जा उपकरणों के संचालन और रखरखाव की जाँच की गई। इसी प्रकार, स्वच्छता और दुर्गंध नियंत्रण के लिए स्टेशनों पर नालियों और शौचालयों की सफाई सुनिश्चित की गई। ट्रेन वाशिंग लाइनों पर विशेष सफाई अभियान चलाए गए, जिनमें शौचालयों, गैंगवे और वेस्टिब्यूल क्षेत्रों पर विशेष ध्यान दिया गया। अधिकारियों द्वारा कई महत्वपूर्ण ट्रेनों का निरीक्षण किया गया, जिसमें पर्याप्त ओबीएचएस स्टाफ, लिनेन की गुणवत्ता और पेंट्री कार की स्वच्छता की जाँच की गई। यात्रियों को बायो-टॉयलेट, फ्लशिंग सिस्टम और कचरा न फैलाने जैसी आदतों के बारे में शिक्षित करने के लिए जागरूकता अभियान भी आयोजित किए गए।

स्टेशनों के ब्लॉक सेक्शन और आस-पास के क्षेत्रों में पटरियों की स्वच्छता पर विशेष ध्यान दिया गया। पटरियों के किनारे बने नाले भी सफाई अभियान में शामिल किए गए। साथ ही, कचरे और अवांछित झाड़ियों को हटाया गया।

इन निरंतर प्रयासों से मण्डल ने स्वच्छ भारत मिशन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दोहराया है और अपने नेटवर्क में यात्रियों एवं समुदायों को स्वच्छ, सुरक्षित और स्वस्थ वातावरण उपलब्ध कराने की दिशा में ठोस कदम बढ़ाए हैं।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल का राज्य सरकार के कर्मचारियों को दिवाली का तोहफा

- महंगाई भत्ते में जुलाई-2025 से केंद्र की तर्ज पर बढ़ोतरी करने का मुख्यमंत्री का कर्मचारी हितैषी दृष्टिकोण
- छठे तथा सातवें वेतन आयोग का लाभ प्राप्त कर रहे राज्य सेवा, पंचायत सेवा एवं अन्य कर्मचारियों सहित कुल 4.69 लाख कर्मचारियों और 4.82 लाख पेंशनभोगियों को मिलेगा लाभ
- महंगाई भत्ते में बढ़ोतरी का 3 महीने का बकाया एक किस्त में दिया जाएगा

गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने राज्य सरकार के कर्मचारियों के व्यापक हित में एक महत्वपूर्ण निर्णय करते हुए छठे और सातवें वेतन आयोग का लाभ प्राप्त कर रहे राज्य सरकार के कर्मचारियों को 1 जुलाई, 2025 से केंद्र की तर्ज पर महंगाई भत्ते में बढ़ोतरी का लाभ देने का निर्णय किया है। मुख्यमंत्री के इस कर्मयोगी हितैषी निर्णय के अंतर्गत सातवें वेतन आयोग का लाभ प्राप्त कर रहे कर्मचारियों के महंगाई भत्ते में 3 फीसदी का इजाफा किया गया है। वहीं, छठे वेतन आयोग का लाभ प्राप्त कर रहे राज्य सरकार के कर्मचारियों के महंगाई भत्ते में 5 फीसदी की बढ़ोतरी की गई है।

इस महंगाई भत्ते की 3 महीने की अर्थात 1 जुलाई, 2025 से 30 सितंबर, 2025 तक की बकाया राशि यानी एरियर का भुगतान एक किस्त में किया जाएगा।

महंगाई भत्ते में इस बढ़ोतरी का लाभ राज्य सरकार और पंचायत सेवा के कर्मचारियों के अलावा अन्य कर्मचारियों सहित कुल 4.69 लाख कर्मयोगियों और लगभग 4.82 लाख सेवानिवृत्त कर्मचारियों यानी पेंशनरों को मिलेगा। इतना ही नहीं, राज्य सरकार इस एरियर के तहत कर्मचारियों को कुल 483.24 करोड़ रुपए का भुगतान करेगी। वहीं, वेतन, भत्ते और पेंशन के लिए वार्षिक अतिरिक्त 1932.92 करोड़ रुपए का भुगतान करेगी। मुख्यमंत्री ने इस कर्मचारी हितैषी निर्णय के कार्यान्वयन के लिए वित्त विभाग को आवश्यक आदेश जारी करने के निर्देश भी दिए हैं।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के राष्ट्र प्रथम के भाव को उजागर करने वाली एक अद्वितीय प्रस्तुति 'मेरा देश पहले' गुजरात में पहली बार 10 अक्टूबर को गिफ्ट सिटी में आयोजित होगी

गांधीनगर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में आकार ले रहे नए भारत के रूपांतरण की एक अनोखी कहानी 'मेरा देश पहले' का गुजरात में पहला शो शुक्रवार, 10 अक्टूबर, 2025 को गांधीनगर स्थित गिफ्ट सिटी में आयोजित होगा। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने हमेशा राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखते हुए अपना जीवन राष्ट्र को समर्पित किया है। उनके पूरे जीवन की अनेक घटनाएं और अवसर देशवासियों में देश प्रेम, समर्पण और राष्ट्र प्रथम का भाव जागृत करने के लिए प्रेरणादायी बनी हैं। 'मेरा देश पहले' श्री नरेन्द्र मोदी के एक अद्वितीय सफर को मेगा शो के माध्यम से जीवंत करता है।

उल्लेखनीय है कि देश के अन्य राज्यों में 'मेरा देश पहले' के सफल और प्रशंसनीय मंचन के बाद, गुजरात में पहली बार गिफ्ट सिटी परिसर में यह शो निःशुल्क प्रवेश के साथ आयोजित होने जा रहा है।

शुक्रवार, 10 अक्टूबर को शाम 6.00 बजे गिफ्ट सिटी में आयोजित होने वाले इस शो को देखने के लिए केवल ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन के जरिए ही निःशुल्क प्रवेश की व्यवस्था की गई है। इसके लिए www.giftgujarat.in पर रजिस्ट्रेशन कराया जा सकता है।

सुप्रसिद्ध कलाकार श्री मनोज मुंतशिर की प्रस्तुति 'मेरा देश पहले' का मंचन देखने के लिए मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल और मंत्रियों के साथ-साथ कई सामाजिक अग्रणियों को भी आमंत्रण दिया गया है।

श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में गुजरात की सफल सर्वग्राही विकास यात्रा के 24 वर्षों की सफलता का जश्न मनाने के लिए 'विकास सप्ताह' का प्रारंभ

- मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल और राज्य मंत्रिमंडल के सदस्यों, मुख्य सचिव और वरिष्ठ सचिवों एवं पदाधिकारियों ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विकसित भारत के स्वप्न को साकार करने के लिए मन, वचन और कर्म से तत्पर रहने के साथ ही देश के प्रति समर्पण भाव की सामूहिक 'भारत विकास प्रतिज्ञा' ली
- विधानसभा पोडियम में सामूहिक प्रतिज्ञा पठन
- नागरिक भारत विकास प्रतिज्ञा पोर्टल- https://pledge.mygov.in/bharat-vikas/ पर ऑनलाइन तरीके से प्रतिज्ञा लेकर प्रमाण पत्र प्राप्त कर सकते हैं

गांधीनग : श्री नरेन्द्र मोदी ने 7 अक्टूबर, 2001 को गुजरात के 14वें मुख्यमंत्री के रूप में शपथ लेकर राज्य की विकास यात्रा को एक नया आयाम दिया था।

उनके नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में गुजरात की 2001 से 2025 तक की 24 वर्षों की सर्वग्राही वैश्विक विकास यात्रा की सफलता गाथा में जनभागीदारी के साथ 7 से 15 अक्टूबर तक चलने वाले 'विकास सप्ताह' के जश्न की शुरुआत 'भारत विकास प्रतिज्ञा' से हुई।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल और राज्य मंत्रिमंडल के सदस्यों, मुख्य सचिव और वरिष्ठ सचिवों एवं पदाधिकारियों ने विधानसभा पोडियम में आयोजित सामूहिक प्रतिज्ञा पठन कार्यक्रम में शामिल होकर 'भारत विकास प्रतिज्ञा' ली।

देश के प्रधानमंत्री के रूप में श्री नरेन्द्र मोदी ने विकसित भारत के निर्माण का जो संकल्प किया है, उसे साकार करने में

अपना संपूर्ण योगदान देने के लिए सभी लोगों ने मन, वचन और कर्म से तत्पर रहने के साथ ही देश के प्रति समर्पण भाव की सामूहिक भारत विकास प्रतिज्ञा की।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल सहित मंत्रियों और मुख्य सचिव श्री पंकज जोशी एवं वरिष्ठ सचिवों द्वारा ली गई 'भारत विकास प्रतिज्ञा' इस प्रकार है:-

मैं भारत के एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में प्रतिज्ञा करता हूँ कि...

- मैं अपने जीवन के हर पल में देश के लिए समर्पित रहूँगा।
- मैं स्वयं के बारे में सोचने से पहले दूसरों के कल्याण के बारे में विचार करूंगा। मैं देश के सभी संसाधनों का न्यायसंगत एवं सतत उपयोग सुनिश्चित करूंगा। मैं देश के सर्वांगीण और समावेशी विकास के लिए निःस्वार्थ भाव से निरंतर प्रयासरत रहूंगा।
- मैं अपने देश की समृद्ध परंपरा और विरासत पर गर्व अनुभव करूंगा तथा उसे संरक्षित रखने का निरंतर प्रयास करूंगा।
- मैं अपने देश के संवैधानिक मूल्यों की रक्षा के लिए सदैव प्रतिबद्ध रहूंगा और उनके संरक्षण में योगदान दूंगा।
- मैं जाति, धर्म या वर्ण के सभी बंधनों से मुक्त होकर, बंधुता और एकता की भावना के साथ अपने देश को सर्वोच्च प्राथमिकता दूंगा। मैं 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के आदर्श को साकार करने हेतु भारत की एकता और अखंडता की रक्षा में निरंतर प्रयासरत रहूंगा।
- मैं प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के विकसित भारत के विजन को साकार करने के लिए अपने मन, वचन और कर्म से निष्ठापूर्वक कार्य करूंगा।
- "हर घर स्वदेशी, घर-घर स्वदेशी" के आदर्श को अपनाकर, मैं आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में अपना सर्वोत्तम योगदान देने का प्रयास करूंगा।
- 'राष्ट्र प्रथम' को अपने जीवन का मूलमंत्र बनाकर, मैं अपने देश के विकास और कल्याण हेतु तन, मन और धन से सतत कार्य करता रहूंगा।

विकास सप्ताह के जश्न के अंतर्गत भारत विकास प्रतिज्ञा ऑनलाइन तरीके से भी ली जा सके, इस उद्देश्य से पोर्टल- https://pledge.mygov.in/bharat-vikas/ शुरू किया गया है। राज्य के नागरिक इसका लाभ उठा सकते हैं और प्रतिज्ञा लेकर उसका प्रमाण पत्र प्राप्त कर सकते हैं।

राज्य सरकार की नूतन पहल :
'वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंसेज'

जापान, दक्षिण कोरिया, वियतनाम तथा नीदरलैंड जैसे देश तथा जेट्रो, इंडो-कनाडा बिजनेस चैम्बर, यूएसआईएसपीएफ, विश्व बैंक एवं रशियन फेडरेशन का व्यापार प्रतिनिधित्व जैसे संस्थान होंगे सहभागी

- **राजकोट में 8-9 जनवरी को, सूरत में 9-10 अप्रैल को और वडोदरा में 10-11 जून, 2026 को आयोजित होगी रीजनल कॉन्फ्रेंस**
- **प्रत्येक क्षेत्रीय संमेलन दो दिन आयोजित होंगे; जिनमें विभिन्न परिसंवाद, प्रदर्शनियाँ, क्षेत्रीय पुरस्कार, एमओयू, बीटुबी-बीटुजी बैठकें, खरीद-बिक्री बैठकों का प्लेटफॉर्म, विक्रेता मार्गदर्शन जैसे विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन**

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल 'वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंसेज' की प्रथम श्रृंखला का 9 अक्टूबर को मेहसाणा से कराएंगे शुभारंभ :
-उद्योग मंत्री श्री बलवंतसिंह राजपूत

राज्य के प्रत्येक प्रदेश की औद्योगिक-आर्थिक क्षमता तथा निवेश की सज्जता का प्लेटफॉर्म बनेंगी 'वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंसेज'
-उद्योग आयुक्त श्री पी. स्वरूप

गांधीनगर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से शुरू हुई वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल समिट (वीजीजीसी) की भारी सफलता के चलते मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन में गुजरात ने एक और नूतन पहल करते हुए 'वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंसेज' (वीजीआरसी) आयोजित करने का निश्चय किया है। इन 'वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंसेज' की प्रथम श्रृंखला का मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल मेहसाणा से 9 अक्टूबर को शुभारंभ कराएंगे।

उद्योग मंत्री श्री बलवंतसिंह राजपूत ने मंगलवार को गांधीनगर में संवाददाता संमेलन में वीजीआरसी के विषय में यह जानकारी दी। इस संवाददाता संमेलन में उद्योग एवं खान विभाग की प्रधान सचिव श्री ममता वर्मा, इंडस्ट्रियल एक्सटेंशन ब्यूरो (इंडेक्स्ट-बी) के प्रबंध निदेशक श्री के. सी. संपत, सूचना निदेशक श्री के. एल. बचाणी उपस्थित थे।

उद्योग मंत्री की उपस्थिति में उद्योग आयुक्त श्री पी. स्वरूप ने वीजीआरसी के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए बताया कि 'वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंसेज' राज्य के प्रत्येक प्रदेश की औद्योगिक-आर्थिक क्षमता एवं निवेश सज्जता का एक अनूठा प्लेटफॉर्म बनेंगी। इतना ही नहीं; यह कार्यक्रम वाइब्रेंट समिट से ग्लोबल इंडस्ट्रियल मैप पर स्थापित हुई गुजरात की छवि को 'वोकल फॉर लोकल' के माध्यम से अधिक उजागर करने में परिणामकारी बनेगा।

उन्होंने जोड़ा कि गुजरात में आयोजित हुई गत वाइब्रेंट समिट की सफलता के फलस्वरूप मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में हर जिले, तहसील एवं गुजरात के सुदूरवर्ती मानव को वाइब्रेंट गुजरात से जोड़ा जा सके; इसके लिए 'वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंसेज' का आयोजन किया गया है। इसमें उत्तर गुजरात अंचल की मेहसाणा में 9-10 अक्टूबर 2025 को, कच्छ एवं सौराष्ट्र अंचल की राजकोट में 8-9 जनवरी 2026 को, दक्षिण गुजरात अंचल की सूरत में 9-10 अप्रैल 2026 को तथा मध्य गुजरात अंचल की वडोदरा में 10-11 जून 2026 को 'वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस' आयोजित होगी।

श्री स्वरूप ने कहा कि गुजरात सरकार ने अब तक 10 'वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल समिट' का सफलतापूर्वक आयोजन किया है और 'वाइब्रेंट गुजरात के 20 वर्ष सफलता के समिट' विषय पर एक कार्यक्रम भी आयोजित किया है। वाइब्रेंट गुजरात के सफल मॉडल को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए राज्य सरकार अब वाइब्रेंट गुजरात क्षेत्रीय संमेलनों का आयोजन कर रही है। ये संमेलन वीजीजीसी की सफलता के मानदंडों के अनुसार ही आयोजित होंगे। क्षेत्रीय स्तर पर उपस्थित औद्योगिक घरानों की प्रतिभा को प्रदर्शित करने तथा वे स्थानीय औद्योगिक विकास में उत्प्रेरक बनें; इस तरह विकसित भारत@2047 तथा विकसित गुजरात@2047 के व्यापक विजन के साथ सुगठित विकास के लिए ये संमेलन एक महत्वपूर्ण माध्यमरूपी बनेंगे।

इतना ही नहीं; अंचल के हर जिले में जिला स्तरीय कार्यक्रम तथा उसके बाद क्षेत्रीय संमेलन आयोजित होगा। क्षेत्रीय संमेलन के लगभग एक-दो माह पहले जिला स्तरीय एक दिवसीय कार्यक्रम आयोजित होंगे; जिसमें भिन्न-भिन्न हिस्सेदारों के साथ विचार-विमर्श, जिले की विशिष्ट चुनौतियों की पहचान, श्रेष्ठ बातों का वृत्तचित्रीकरण तथा आगामी क्षेत्रीय संमेलन की आवश्यकताएँ निश्चित की जाएंगी। उन्होंने जोड़ा कि उत्तर गुजरात के वाइब्रेंट गुजरात क्षेत्रीय संमेलन के लिए अरवल्ली, बनासकाँठा, पाटण तथा साबरकाँठा में जिला स्तरीय कार्यक्रम पूर्ण हो गए हैं।

उद्योग आयुक्त ने कहा कि क्षेत्रीय संमेलन दो दिन आयोजित होंगे। ये संमेलन जिला स्तरीय आवश्यकताओं के संदर्भ में निवेश सुविधा, वैचारिक आदान-प्रदान तथा नेटवर्किंग के लिए एक प्रभावशाली माध्यम के रूप में सेवा देंगे। इन संमेलनों के जरिये उद्योगपतियों, उद्यमियों, सरकारी संस्थाओं, विदेशी व्यापार घरानों, व्यापार एवं उद्योग संगठनों, स्टार्टअप्स, शैक्षणिक एवं अनुसंधान संस्थानों सहित विभिन्न हिस्सेदारों को एक ही प्लेटफॉर्म पर लाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

इसके अतिरिक्त; हर क्षेत्रीय संमेलन में उद्घाटन व समापन सत्र, क्षेत्र विशिष्ट अथवा जिला विशिष्ट परिसंवाद, व्यापार प्रदर्शनी, क्षेत्रीय पुरस्कार, एमओयू पर हस्ताक्षर, बीटुबी तथा बीटुजी बैठकें, खरीद-बिक्री बैठकों का प्लेटफॉर्म, विक्रेता मार्गदर्शन कार्यक्रम, अग्रगण्य पर्यटन स्थलों तथा स्थानीय औद्योगिक क्लस्टरों की पर्यटन यात्राओं एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा।

उन्होंने जोड़ा कि ये क्षेत्रीय संमेलन केवल क्षेत्रीय उपलब्धियाँ दर्शाने तथा नए आयामों की घोषणा करने के लिए एक प्लेटफॉर्म के रूप में ही नहीं, अपितु क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाकर, श्रेष्ठता को प्रोत्साहन देकर एवं रणनीतिक निवेशों को सरल बनाकर गुजरात की विकास गाथा को आगे बढ़ाने की राज्य सरकार की मंशा हैं।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने 28 अगस्त 2025 को अहमदाबाद में वाइब्रेंट गुजरात क्षेत्रीय संमेलनरूपी पहल का आधिकारिक प्रारंभ कराया था। इसके अलावा; नई दिल्ली में उद्योगपतियों, मिशन प्रमुखों, राजनयिकों तथा भारत सरकार के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ इंटरेक्शन मीट भी आयोजित की थी। वाइब्रेंट गुजरात अंतर्गत मेहसाणा में आयोजित होने वाली वीजीआरसी में क्रॉस सेक्टरल फोकस कौशल विकास, स्टार्टअप्स, एमएसएमई, पर्यटन तथा संस्कृति को शामिल किया गया है।

वीजीआरसी (उत्तर गुजरात)
9 अक्टूबर 2025 गुरुवार
- उद्घाटन समारोह
- 21 सेमिनार
- 2 राउंडटेबल कॉन्फ्रेंस
- 3 पैनल चर्चाएँ
- वडनगर में सांस्कृतिक कार्यक्रम

10 अक्टूबर 2025 शुक्रवार
- रीजनल एमएसएमई कॉन्क्लेव
- 11 सेमिनार
- 10 पैनल चर्चाएँ
- वेंडर डेवलपमेंट कार्यक्रम
- समापन सत्र

इन दोनों दिन उद्यमी मेला, रिवर्स बायर-सेलर मीट तथा बीटुबी/बीटुजी मीटिंग का आयोजन किया जाएगा।

- क्षेत्रीय प्रदर्शनी 9 से 13 अक्टूबर 2025 के दौरान एग्जीबिनशन हॉल में सुबह 10 से शाम 6 बजे तक प्रदर्शनी आयोजित होगी, जो 11 से 13 अक्टूबर 2025 तक लोगों के लिए खुली रहेगीष 18,000 वर्ग मीटर के कुल क्षेत्र में आयोजित होने वाली इस प्रदर्शनी में एमएसएमई, कुटीर एवं ग्रामीण क्षेत्रों के लिए 1000 वर्ग मीटर का पैवेलियन बनाया जाएगा।
- रिवर्स बायर-सेलर मीट में कुल 40 देशों से 38 अंतरराष्ट्रीय खरीदार सहभागी होंगे, जिनमें विभिन्न क्षेत्रों के प्रत्येक खरीदार के लिए अवसर उपलब्ध होंगे।

कृषि : गेहूँ, बाजरा, आलू, टमाटर, सोयाबीन, चीकू आदि।
मसाले : जीरा, सौंफ, इसबगोल, धनिया, रायडा आदि।
डेयरी उत्पाद : दूध, चीज, दूध पाउडर, मिठाइयाँ, मक्खन आदि।
ऑटोमोबाइल : स्पेयरपार्ट्स तथा घटक
फूड प्रोसेसिंग : पीनट बटर, पोटैटो चिप्स और अन्य।

9 व 10 अक्टूबर 2025 के दौरान पर्यटन एवं उद्योग यात्राएँ

सुबह 8 बजे से पूरे दिन की पर्यटन यात्रा का आयोजन किया जाएगा। इसमें अनंत अनादि वडनगर में बौद्ध मठ, संग्रहालयों, मंदिरों तथा सांस्कृतिक प्रदर्शनियों, अंबाजी में आध्यात्मिक यात्रा (अंबाजी मंदिर व गब्बर पर्वत), गुजरात में बुद्ध क विरासतों (तारंगा गुफाएँ व पुरातत्वीय स्थलों), प्रकाश से गहराई तक : मंदिर एवं वाव (रानी की वाव, पटोळा संग्रहालय, मोढेरा सूर्य मंदिर) और लाइन ऑफ ड्यूटी : नडाबेट में एक दिन (भारत-पाकिस्तान सीमा पर स्थित आकर्षणों, संग्रहालयों तथा रीट्रीट परेड) शामिल हैं।

सुबह 9 बजे से आधे दिन की यात्राएँ शुरू होंगी। इनमें सांस्कृतिक व विरासत के अनुभव दर्शाए जाएंगे; जैसे कि रानी की वाव तथा पटोळा म्यूजियम, मोढेरा सूर्य मंदिर, लाइट एंड साउंड शो, सिद्धपुर, सोलवोक (धार्मिक विधियाँ व विरासत स्थल) और पृथ्वी की प्रतिध्वनि (बालासिनोर डायनासोर पार्क तथा म्यूजियम)।

औद्योगिक यात्राओं में मोढेरा सूर्य मंदिर (आधा दिन), चारणका स्थित गुजरात का प्रथम सोलर पार्क तथा राधनेसडा स्थित 700 मेगावाट यूएमएसपीपी शामिल हैं। इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले उद्योगकार, स्टार्टअप तथा विद्यार्थी, जो अपना व्यवसाय शुरू करना चाहते हों, उन लोगों को उद्योग संबंधी प्रैक्टिकल ज्ञान देने के उद्देश्य से औद्योगिक इकाइयों की स्थल मुलाकात का आयोजन किया गया है। इस स्थल मुलाकात के दौरान डेलीगेट्स को सम्बद्ध उद्योग गृह में उत्पादन प्रक्रिया, कच्चे माल की उपलब्धता, बिक्री के अवसरों के बारे में जानकारी दी जाएगी। वाइब्रेंट कॉन्फ्रेंस में भाग लेने वाले प्रतिनिधियों को मारुति सुजुकी, होंडा मोटर्स, बनास डेयरी, दूध सागर डेयरी, साबर डेयरी, फणीधर फूड पार्क जैसे महत्वपूर्ण उद्योग गृहों व इकाइयों की मुलाकात करवा कर उन उद्योगों से जुड़ी प्रैक्टिकल जानकारी देने का आयोजन किया गया है।

यहाँ उल्लेखनीय है कि 6 अक्टूबर तक कुल 13,246 पंजीकरण हुए हैं। इनमें 216 अंतरराष्ट्रीय सहित कुल 11,732 व्यक्तिगत तथा 35 अंतरराष्ट्रीय सहित 1514 कंपनियाँ सहभागी होने वाली हैं। इसके अलावा; जापान, दक्षिण कोरिया, वियतनाम तथा नीदरलैंड (कृषि परिसंवाद) जैसे देशों ने सहभागी होने की पुष्टि की है और जेट्रो, इंडो-कनाडा बिजनेस चैम्बर (आईसीबीसी), यूएसआईएसपीएफ, विश्व बैंक, रशियन फेडरेशन का व्यापार प्रतिनिधिमंडल जैसे संस्थान भी सहभागी होंगे।

इस कॉन्फ्रेंस में राजनियकों-राजदूतों/उच्चायुक्तों ने भी उपस्थित रहने की सहमति दी है। इनमें भारत में जापान (सहभागी देश) के राजदूत श्री केइची ओनो, भारत में वियतनाम (सहभागी देश) के विशेष एवं पूर्णाधिकारी राजदूत श्री गुयेन थान हाई, भारत में न्यूजीलैंड के उच्चायुक्त श्री पैट्रिक जॉन राटा, भारत में रवांडा गणराज्य की उच्चायुक्त श्री जैक्लीन मुकनगिरा, भारत में गुयाना के उच्चायुक्त श्री धरमकुमार सीराज, भारत में यूक्रेन दूतावास के राजदूत डॉ. अलेक्जेंडर पोलिशचुक शामिल हैं।

इसके अतिरिक्त; केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण तथा इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव, इसरो के अध्यक्ष डॉ. वी. नारायणन, विश्व बैंक के दक्षिण एशिया के उपाध्यक्ष श्री जोहान्स जूट, टोरेंट समूह के उपाध्यक्ष व प्रबंध निदेशक श्री जिनल मेहता, अदाणी सीमेंट लिमिटेड के प्रबंध निदेशक, एपीएस कार्यपालक निदेशक तथा अध्यक्ष श्री करण अदाणी, अरविंद लि. के उपाध्यक्ष श्री कुलीन लालभाई, सेवी के प्रबंध निदेशक श्री जक्षय शाह, अमूल के प्रबंध निदेशक श्री मनीष किरी व श्री गणपत पटेल, श्री शंकर चौधरी, जस्टिस बेला त्रिवेदी, श्रीमती नेहा मेहता, श्री हितुभाई कनोडिया, श्री असितकुमार मोदी और डॉ. करसनभाई पटेल जैसे अग्रणी भी उपस्थित रहेंगे।

अन्य तीन रीजनल कॉन्फ्रेंसेज के फोकस क्षेत्र

कच्छ तथा सौराष्ट्र अंचल की कॉन्फ्रेंस 8-9 जनवरी 2026 को सौराष्ट्र विश्वविद्यालय-राजकोट में आयोजित होगी, जिसमें सिरामिक्स, इंजीनियरिंग, पोर्ट्स तथा लॉजिस्टिक्स, मत्स्योद्योग, पेट्रोकेमिकल्स, कृषि एवं खाद्य प्रक्रिया, खनिज, ओफशोर पवन जैसे क्षेत्रों पर ध्यान केन्द्रित किया जाएगा।

दक्षिण गुजरात अंचल की कॉन्फ्रेंस 9-10 अप्रैल 2026 को सूरत अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनी एवं संमेलन केन्द्र, एसजीसीसीआई, सूरत में आयोजित होगी। इसमें केमिकल्स तथा पेट्रोकेमिकल्स, टेक्सटाइल व एपेरल, जेम्स एंड ज्वैलरी, कृषि एवं खाद्य प्रक्रिया जैसे क्षेत्रों पर ध्यान केन्द्रित किया जाएगा।

मध्य गुजरात अंचल की कॉन्फ्रेंस 10-11 जून 2026 के दौरान दीनदयाल उपाध्याय नगर गृह, वडोदरा में आयोजित होगी। इसमें सेमीकंडक्टर तथा ईएसडीएम, आईटी एंड आईटीईएस, बायोटेक/बायोफार्मा, एयरोस्पेस तथा रक्षा, फिनटेक, केमिकल्स तथा पेट्रोकेमिकल्स, टेक्सटाइल व एपेरल, ऑटो तथा ऑटो कम्पोनेंट्स, शिक्षा जैसे क्षेत्रों पर ध्यान केन्द्रित किया जाएगा।

भावनगर टर्मिनस से चलने वाली भावनगर – शहीद कप्तान तुषार महाजन जन्मभूमि एक्सप्रेस अगले आदेश तक रद्द

यात्रियों की जानकारी हेतु सूचित किया जाता है कि परिचालन कारणों के चलते पश्चिम रेलवे, भावनगर मंडल से चलने वाली भावनगर टर्मिनस – शहीद कप्तान तुषार महाजन जन्मभूमि एक्सप्रेस अस्थायी रूप से निरस्त (Cancelled) रहेगी।

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया कि संबंधित ट्रेनों के निरस्तीकरण का विस्तृत विवरण इस प्रकार है:

1.ट्रेन संख्या 19107 – भावनगर टर्मिनस – शहीद कप्तान तुषार महाजन जन्मभूमि एक्सप्रेस को पूर्व में दिनांक 12.10.2025 तक रद्द किया गया था, जिसे अब अगले आदेश तक पूर्णतः निरस्त (Fully Cancelled) कर दिया गया है।

2.ट्रेन संख्या 19108 – शहीद कप्तान तुषार महाजन जन्मभूमि – भावनगर टर्मिनस एक्सप्रेस को पूर्व में दिनांक 13.10.2025 तक रद्द किया गया था, जिसे अब अगले आदेश तक पूर्णतः निरस्त (Fully Cancelled) कर दिया गया है।

यात्रियों से अनुरोध है कि यात्रा की योजना बनाते समय उक्त जानकारी का संज्ञान लें। ट्रेन के ठहराव, संरचना एवं समय-सारणी संबंधी विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया भारतीय रेल की आधिकारिक वेबसाइट www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन करें।

पश्चिम रेलवे द्वारा लिफ्टों, एस्केलेटरों और अर्थिंग पिट्स के लिए स्मार्ट डिजिटल मॉनिटरिंग सिस्टम 'सुगम रेल' लॉन्च

पश्चिम रेलवे ने डिजिटल गवर्नेंस तथा यात्री सुरक्षा के क्षेत्र में एक और उपलब्धि अर्जित की है। सुगम रेल भारतीय रेल पर अपनी तरह का पहला सॉफ्टवेयर आधारित प्लेटफॉर्म है, जिसे लिफ्टों, एस्केलेटरों और अर्थिंग पिट्स की रियल टाइम मॉनिटरिंग के लिए डिजाइन किया गया है।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, यह एप्लिकेशन पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री विवेक कुमार गुप्ता के नेतृत्व में विकसित किया गया है, जिसका उद्देश्य मुख्य सुरक्षा और रखरखाव प्रणालियों में प्रौद्योगिकी को एकीकृत करना है। इससे पहले लिफ्टों, एस्केलेटरों और अर्थिंग अवसंरचना का पर्यवेक्षण कई डिपो में बनाए गए मैनुअल रजिस्टरों पर निर्भर था, जिसके कारण खराबी का पता लगाने में देरी, फ्रेगमेंटेड रिपोर्टिंग और सीमित जवाबदेही होती थी। सुगम रेल के कार्यान्वयन के साथ पश्चिम रेलवे में 470 से अधिक लिफ्ट/एस्केलेटर और लगभग 21,500 अर्थिंग पिट अब एक

एकीकृत डिजिटल डैशबोर्ड के अंतर्गत आ गए हैं, जो मंडल और मुख्यालय स्तर पर अधिकारियों के लिए सुलभ है। यह प्रणाली उपकरणों की स्थिति की चौबीसों घंटे निगरानी सुनिश्चित करती है, बार-बार होने वाली खराबी या अतिदेय निरीक्षणों को स्वचालित रूप से चिह्नित करती है और उच्च अनुपालन के साथ समय पर हस्तक्षेप को सक्षम बनाती है। यह परिसंपत्ति-वार और कारण-वार विस्तृत विफलता विश्लेषण प्रदान करती है, जबकि विफलताओं के बीच औसत समय (एमटीबीएफ) और रखरखाव अनुपालन दर जैसे प्रमुख प्रदर्शन संकेतक (केपीआई) का उपयोग परिसंपत्ति विश्वसनीयता का आकलन करने के लिए किया जाता है।

अपने परिचालन लाभों के अलावा, यह पहल यात्रियों की सुविधा और सुरक्षा को भी महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाती है। लिफ्ट और एस्केलेटर के प्रदर्शन की डिजिटल ट्रैकिंग, ब्रेकडाउन पर तेज़ी से ध्यान देने में मदद करती है, जिससे वरिष्ठ नागरिकों, दिव्यांगजन यात्रियों और बच्चों के साथ यात्रा करने वाली महिलाओं को लाभ होता है। साथ ही, अर्थिंग प्रतिरोध की संरचित निगरानी विद्युत खतरों को रोकने में मदद करती है और स्टेशनों और रेलवे प्रतिष्ठानों पर सुरक्षा मानकों का कड़ाई से पालन सुनिश्चित करती है। भौतिक रजिस्टरों को डिजिटल, एनालिटिक्स-समर्थित तंत्र से बदलकर, पश्चिम रेलवे ने रेलवे अवसंरचना प्रबंधन में एक नया मानदंड स्थापित किया है। सुगम रेल के चालू होने के साथ पश्चिम रेलवे ने सुरक्षित, स्मार्ट और जवाबदेह रेल संचालन के लिए बुद्धिमान डिजिटल समाधानों को अपनाने की अपनी प्रतिबद्धता की पुनः पुष्टि की है। यह प्लेटफ़ॉर्म सार्वजनिक सेवा वितरण में उभरती माँगों को पूरा करने के लिए डिज़ाइन किए गए नवपरिवर्तन के एक मॉडल के रूप में खड़ा है।

Industrial Training Institute
Skill India कौशल भारत-कुशल भारत
गुजरात सरकार
અનુબંધમ્

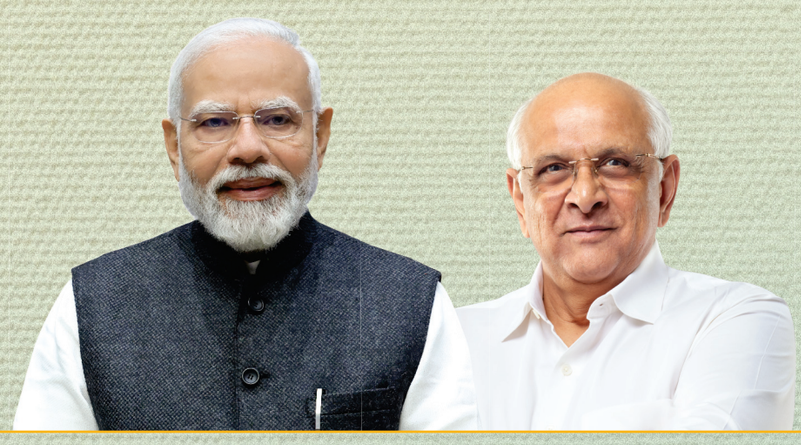

विकास सप्ताह
२४ वर्ष जनविश्वास, सेवा अने समर्पणनां

हर घर स्वदेशी, घर घर स्वदेशी

माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्रभाई पटेल की अध्यक्षता में

युवा रोजगार एवं कौशल सशक्तिकरण समारोह

दिनांक: ८ अक्टूबर, २०२५ | समय: दोपहर १२:३० बजे
स्थान: टाउन हॉल, सेक्टर-१७, गांधीनगर

रोजगार पत्रों का वितरण
प्रोविजनल ऑफर लेटर का वितरण
उद्योगों के साथ MoUs

श्रम, कौशल विकास एवं रोजगार विभाग, गुजरात सरकार
सीधा प्रसारण: CMOGuj CMOGuj CMOGujarat CMOGujarat